

सेरेब्रल पाल्सी: संवेदना नहीं, समान अवसर की दरकार

(लेखक- अतुल गोयल)

मस्तिष्क पक्षाघात से जंग नहीं, संभावनाओं को पंख देने का समय

(विश्व सेरेब्रल पाल्सी दिवस (6 अक्टूबर) पर विशेष)

किसी व्यक्ति की पहचान उसकी शारीरिक सीमाओं से नहीं, उसकी प्रतिभा, इच्छाशक्ति, संवेदनाओं और संभावनाओं से होनी चाहिए। यही संदेश प्रत्येक वर्ष 6 अक्टूबर को मनाए जाने वाले ’विश्व सेरेब्रल पाल्सी दिवस’ की मूल भावना में निहित है। विश्व सेरेब्रल पाल्सी दिवस 2026 की थीम ‘अद्वितीय और एकजुट’ है, जिसका आधिकारिक अभियान **#UniqueANDUnited** इस विचार को सामने रखता है कि सेरेब्रल पाल्सी से प्रभावित प्रत्येक व्यक्ति का अनुभव, व्यक्तित्व, आवश्यकता और क्षमता अलग है लेकिन समान अधिकार, अवसर और सम्मान की मांग उन्हें एकजुट करती है। इस वर्ष का संदेश केवल जागरूकता बढ़ाने तक सीमित नहीं बल्कि समाज की सोच और व्यवस्था में वास्तविक परिवर्तन लाने का आह्वान है।

सेरेब्रल पाल्सी यानी मस्तिष्क पक्षाघात मस्तिष्क के विकास के दौरान होने वाली क्षति या असामान्य विकास से उत्पन्न विकारों का एक समूह है। इसका प्रभाव मुख्यतः शरीर की गति, मांसपेशियों के नियंत्रण, संतुलन और शारीरिक मुद्रा पर पड़ता है। कुछ लोगों में बोलने, निगलने, देखने, सुनने या सीखने से जुड़ी कठिनाइयाँ भी हो सकती हैं। इसकी गंभीरता हर व्यक्ति में अलग होती है। कोई व्यक्ति थोड़ी असामान्य चाल के बावजूद स्वतंत्र जीवन जी सकता है जबकि किसी अन्य व्यक्ति को चलने-फिरने, संवाद करने अथवा दैनिक गतिविधियों के लिए जीवनभर सहायक उपकरण और दूसरों की सहायता की आवश्यकता हो सकती है। इसलिए सेरेब्रल पाल्सी को एक समान अनुभव मानना इस स्थिति की वास्तविक विविधता को समझने में बड़ी भूल होगी।

विश्व सेरेब्रल पाल्सी दिवस की शुरुआत 2012 में ऑस्ट्रेलिया के सेरेब्रल पाल्सी अलायंस और अमेरिका के यूनाइटेड सेरेब्रल पाल्सी के सहयोग से हुई थी। इसका उद्देश्य दुनियाभर में सेरेब्रल पाल्सी के साथ जीवन जी रहे लोगों को अपनी आवाज बुलंद

करने, अपनी क्षमताओं को सामने लाने और समाज में समान भागीदारी का अधिकार हासिल करने के लिए एक वैश्विक मंच उपलब्ध कराना था। शुरुआती अभियान ‘वेंज माय वर्ल्ड’ ने लोगों से यह पृष्ठने की कोशिश की थी कि तकनीक और नवाचार उनके जीवन को किस प्रकार बेहतर बना सकते हैं। समय के साथ यह पहल जागरूकता अभियान से आगे बढ़कर अधिकार, नीति, स्वास्थ्य सेवाओं, शिक्षा, रोजगार और सामाजिक समावेशन की वैश्विक आवाज बन गई। आज विश्व स्तर पर लगभग 5 करोड़ लोग सेरेब्रल पाल्सी के साथ जीवन जी रहे हैं। इसके बावजूद यह स्थिति लंबे समय तक सार्वजनिक स्वास्थ्य और विकांगता संबंधी विमर्श में अपेक्षित प्राथमिकता नहीं पा सकी है।

समस्या केवल चिकित्सा की नहीं है। अनेक लोगों को पुनर्वास सेवाओं, सहायक उपकरणों, समावेशी शिक्षा, रोजगार और सुगम सार्वजनिक परिवहन तक पहुंच में कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है। कई बार शारीरिक अवरोध से अधिक बड़ी बाधा समाज की पूर्वधारणाएं और भेदभाव बन जाते हैं। इसलिए इस दिवस का वास्तविक उद्देश्य दया पैदा करना नहीं, सम्मान, अधिकार और समान अवसर सुनिश्चित करना है। सेरेब्रल पाल्सी का मूल कारण विकासशील मस्तिष्क में क्षति या असामान्य विकास है। यह क्षति जन्म से पहले, जन्म के दौरान या जन्म के बाद मस्तिष्क के विकास की अवस्था में हो सकती है। समय से पहले जन्म, कम जन्म-वजन, गर्भावस्था के दौरान कुछ संक्रमण, गंभीर नवजात पीलिया, मस्तिष्क में रक्तस्राव या रक्त प्रवाह से जुड़ी समस्याएं तथा जन्म के बाद मस्तिष्क संक्रमण या गंभीर सिर की चोट इसके जोखिम को बढ़ा सकती हैं। आनुवंशिक कारक भी कुछ मामलों में भूमिका निभा सकते हैं। यहां यह समझना महत्वपूर्ण है कि सेरेब्रल पाल्सी के सभी मामलों का कोई एक निश्चित कारण नहीं होता। लंबे समय तक इसे मुख्यतः जन्म के समय ऑक्सीजन की कमी से जोड़कर देखा जाता रहा लेकिन आधुनिक चिकित्सा विज्ञान के अनुसार जन्म के समय ऑक्सीजन की कमी केवल कुछ मामलों की व्याख्या करती है।

सेरेब्रल पाल्सी को सामान्यतः चार प्रमुख प्रकारों में समझा

जाता है। स्पास्टिक सेरेब्रल पाल्सी में मांसपेशियों में अकड़न और बढ़ा हुआ मांसपेशीय तनाव होता है तथा यह सबसे सामान्य प्रकार है। डिस्काइनेटिक सेरेब्रल पाल्सी में अनेच्छिक, अनियंत्रित या असामान्य गतिविधियां दिखाई दे सकती हैं। एटैक्सिक सेरेब्रल पाल्सी मुख्यतः संतुलन और समन्वय को प्रभावित करती है। वहीं मिक्सड सेरेब्रल पाल्सी में एक से अधिक प्रकार के लक्षण दिखाई देते हैं। इन प्रकारों के बावजूद किसी व्यक्ति की वास्तविक स्थिति को केवल उसके चिकित्सकीय वर्गीकरण से नहीं समझा जा सकता क्योंकि प्रत्येक व्यक्ति में लक्षणों की तीव्रता और क्षमताओं का स्वरूप अलग हो सकता है।

इस स्थिति की पहचान में प्रारंभिक हस्तक्षेप अत्यंत महत्वपूर्ण है। यदि शिशु समय पर सिर संभालने, पलटने, बैठने, रेंगने या चलने जैसी विकासात्मक अवस्थाएं हासिल नहीं कर रहा हो, मांसपेशियां अत्यधिक कड़ी या ढीली लगें, शरीर की गतिविधियों में असामान्यता दिखाई दे अथवा एक तरफ का हाथ या पैर दूसरे की तुलना में कम इस्तेमाल हो तो विशेषज्ञ चिकित्सकीय मूल्यांकन जरूरी है। निदान के लिए बच्चे के विकास और गतिविधियों का आकलन, चिकित्सकीय परीक्षण तथा आवश्यकता के अनुसार मस्तिष्क की इमेजिंग, आनुवंशिक अथवा अन्य परीक्षण किए जा सकते हैं। शीघ्र पहचान का लाभ यह है कि बच्चे और परिवार को आवश्यक पुनर्वास एवं सहायता जल्द मिल सकती है।

सेरेब्रल पाल्सी का अभी कोई ऐसा उपचार नहीं है, जो मूल मस्तिष्कीय क्षति को पूरी तरह समाप्त कर दे लेकिन इसका अर्थ यह कतई नहीं कि व्यक्ति के जीवन की संभावनाएं सीमित हैं। फिजियोथेरेपी, ऑक्ज्यूपेशनल थेरेपी, स्पीच और लैंग्वेज थेरेपी, सहायक उपकरण, दवाएं तथा कुछ मामलों में शल्य चिकित्सा लक्षणों को नियंत्रित करने और स्वतंत्रता बढ़ाने में मदद कर सकती हैं। उपचार का लक्ष्य केवल चलने की क्षमता विकसित करना नहीं बल्कि व्यक्ति को संवाद, शिक्षा, आत्मनिर्भरता, सामाजिक सहभागिता और बेहतर जीवन-गुणवत्ता के अधिकतम अवसर उपलब्ध कराना होना चाहिए। भारत में भी सेरेब्रल पाल्सी को अधिकार और समावेशन के व्यापक दृष्टिकोण से देखने की

एशियन गेम्स में दुनिया ने देखा भारत की नारी शक्ति का दम

(लेखक- सुश्री निर्मला भुरिया)

एशियन गेम्स 2026 में भारतीय खिलाड़ियों ने शानदार प्रदर्शन करते हुए देश को 85 पदक दिलाए और पदक तालिका में चौथा स्थान हासिल किया। भारत के खाते में 21 स्वर्ण, 27 रजत और 37 कांस्य पदक आए। इस उपलब्धि की सबसे गौरवपूर्ण तस्वीर यह है कि महिला खिलाड़ियों ने 38 पदक अपने नाम किए, जो पुरुष खिलाड़ियों के बराबर हैं। इनमें 11 स्वर्ण पदक महिला खिलाड़ियों और महिला टीमों ने जीते।

भारत की बेटियों का यह प्रदर्शन केवल खेल की उपलब्धि नहीं है, बल्कि यह बदलते भारत और सशक्त होती नारी शक्ति की तस्वीर है। क्रिकेट में भारतीय महिला टीम ने स्वर्ण जीतकर देश का गौरव बढ़ाया, वहीं महिला कबड्डी और महिला हॉकी टीम ने भी स्वर्णिम सफलता हासिल की। महिला हॉकी टीम की स्वर्णिम वापसी विशेष रूप से ऐतिहासिक रही, जिसने 44 वर्ष बाद एशियन गेम्स का स्वर्ण पदक अपने नाम किया।

एशियन गेम्स में भारतीय बेटियों की सफलता महिला सशक्तिकरण की सबसे प्रभावशाली तस्वीर है। आज हमारी बेटियां केवल खेल के मैदान में पदक नहीं जीत रही, बल्कि वे देश की करोड़ों बेटियों के सपनों को भी नई दिशा दे रही हैं। उनकी सफलता यह विश्वास मजबूत करती है कि बेटी को अवसर, प्रोत्साहन और विश्वास दिया जाए तो वह किसी भी क्षेत्र में सर्वोच्च शिखर तक पहुंच सकती है।

व्यक्तिगत स्पर्धाओं में भी भारतीय बेटियों ने नए इतिहास रचे। कुमकुम मोहोड ने महिला व्यक्तिगत रिकर्व में भारत के लिए पहला एशियन गेम्स स्वर्ण पदक जीता। महिला रिकर्व टीम ने भी स्वर्ण अपने नाम किया। निशानेबाजी में नीरु धांडा

ने स्वर्ण पदक जीतकर शानदार उपलब्धि हासिल की। मुक़्केबाजी में लवलीना बोरगोहेन और परवीन हुड्डा ने स्वर्ण पदक जीते, जबकि गोल्फ में प्रणवी उर्स ने भारत के लिए ऐतिहासिक स्वर्ण पदक हासिल किया। मीराबाई चानू ने भारोतोलन में रजत पदक जीतकर भारत के लिए इस खेल में लंबे अंतराल के बाद पदक दिलाया।

इस गौरवपूर्ण उपलब्धि में मध्यप्रदेश की बेटियों ने भी अपनी प्रतिभा और मेहनत का परचम लहराया। प्रदेश की क्रिकेटर क्रांति गौड़ भारतीय महिला क्रिकेट टीम की स्वर्ण पदक विजेता टीम का हिस्सा बनीं। छोटे से गांव से निकलकर एशियन गेम्स जैसे बड़े अंतर्राष्ट्रीय मंच तक पहुंचकर स्वर्ण पदक जीतना उनकी मेहनत और संघर्ष की प्रेरक कहानी है। निशानेबाजी में मध्यप्रदेश की नीरु धांडा ने असाधारण प्रदर्शन करते हुए महिला ट्रेप व्यक्तिगत स्पर्धा में स्वर्ण पदक जीता। इसके साथ ही उन्होंने ट्रेप मिक्सड टीम में भी स्वर्ण और महिला ट्रेप टीम स्पर्धा में रजत पदक हासिल किया। इस तरह नीरु ने एशियन गेम्स में तीन पदक जीतकर प्रदेश और देश का गौरव बढ़ाया।

निशानेबाजी में ही मध्यप्रदेश की आशी चौकसे ने महिला 50 मीटर राइफल थी पोजिशन टीम स्पर्धा में रजत पदक जीता, जबकि मनीषा कीर ने महिला ट्रेप टीम स्पर्धा में रजत पदक हासिल कर देश का मान बढ़ाया। इसी तरह मध्यप्रदेश की अंतर्राष्ट्रीय सेलर हर्षिता तोमर ने 49द्वंद्व स्रज्ज महिला स्किफ ईवेंट में कांस्य पदक हासिल किया है।

भारतीय महिला हॉकी टीम की स्वर्णिम सफलता में भी मध्यप्रदेश की बेटियों की महत्वपूर्ण भागीदारी रही। इशिका चौधरी, बिच्छू देवी और सुशीला चानू भारतीय महिला हॉकी टीम का हिस्सा रही, जिसने एशियन गेम्स में स्वर्ण पदक जीतकर देश को गौरवान्वित किया। एक बेटी की सफलता

क्या है शुद्ध अहिंसा!

गांधी जी ने अपने जीवन में अहिंसा के विविध प्रयोग किए। वे एक वैज्ञानिक थे। उनका जीवन प्रयोगशाला था। उनका प्रारंभिक और अंतिम साहित्य देखने से यह तथ्य भलीभांति स्पष्ट हो जाता है। बड़े जीव की सुरक्षा के लिए छोटे जीव को मारने में वे पाप बताते थे। खती को हानि पहुंचाने वाले बंदर, हिरण तथा अन्य जहरीले जानवरों को मारने में भी वे पाप मानते थे। यद्यपि आवश्यकतावश उन्होंने जीवों को मारने की इजाजत भी दी, पर उसे शुद्ध अहिंसा कभी नहीं माना। मेरे सामने भी ऐसे प्रश्न आते हैं कि बिल्ली चूहे को मारती है। आज धार्मिकों की स्थिति बड़ी दयनीय है। उन्हें देखकर दिल में दर्द होता है। जैसे-तैसे शोषण से पैसे का

आवश्यकता है। दिव्यांगजन अधिकार अधिनियम, 2016 में सेरेब्रल पाल्सी को मान्यता प्राप्त दिव्यांगताओं में शामिल किया गया है। शिक्षा में उचित सहयोग, सार्वजनिक स्थलों और परिवहन की सुगमता, डिजिटल पहुंच, रोजगार के अवसर, सामाजिक सुरक्षा तथा सहायक उपकरणों तक पहुंच सुनिश्चित करना केवल कल्याणकारी कदम नहीं बल्कि अधिकार आधारित दृष्टिकोण का हिस्सा है। परिवारों को भी केवल देखभालकर्ता के रूप में नहीं, निर्णय प्रक्रिया के महत्वपूर्ण साझेदार के रूप में देखा जाना चाहिए।

वास्तविक समावेशन तब होगा, जब सेरेब्रल पाल्सी से प्रभावित बच्चे को विद्यालय में प्रवेश तो मिले लेकिन उसके लिए रास्ते, कक्षा, शौचालय, अध्ययन सामग्री और परीक्षा प्रणाली भी सुलभ हों; जब युवा को नौकरी का अवसर उसकी शारीरिक स्थिति के आधार पर नहीं, उसकी योग्यता के आधार पर मिले; जब सार्वजनिक परिवहन और डिजिटल तकनीक उसके लिए बाधा नहीं, स्वतंत्रता का माध्यम बने; और जब समाज सहायता करने से पहले उसकी इच्छा और आवश्यकता पूछना सीखे। ‘अद्वितीय और एकजुट’ का संदेश इसी व्यापक परिवर्तन की ओर संकेत करता है। प्रत्येक व्यक्ति अद्वितीय है और उसकी क्षमताओं को किसी एक पैमाने से नहीं मापा जा सकता। हमें ‘क्या नहीं कर सकता’ पूछने के बजाय ‘क्या कर सकता है और उसे बेहतर अवसर कैसे दिए जाएं’ पर ध्यान केंद्रित करना होगा। विश्व सेरेब्रल पाल्सी दिवस इसलिए केवल एक जागरूकता दिवस नहीं, हमारी सामाजिक संवेदनशीलता की परीक्षा भी है। जरूरत सहानुभूति से आगे बढ़कर समानता, सम्मान और भागीदारी सुनिश्चित करने की है। दुनिया के करोड़ों लोगों की अलग-अलग कहानियां हमें यही सिखाती हैं कि विविधता कमजोरी नहीं, मानव समाज की शक्ति है। जब हर व्यक्ति को अपनी क्षमता के अनुरूप आगे बढ़ने का अवसर मिलेगा, तभी ‘अद्वितीय’ लोग सचमुच ‘एकजुट’ होकर ऐसा समाज बना सकेंगे, जिसमें किसी की शारीरिक स्थिति उसके सपनों की सीमा तय न करे।

(लेखक न्यूयॉर्क की कंपनी में सॉफ्टवेयर डवलपमेंट इंजीनियर हैं)

संपादकीय

एशियाई खेलों में भारत

हम संतोष कर सकते हैं कि एशियाई खेलों में भारत चौथे स्थान पर रहा है। इस प्रतिष्ठित खेल स्पर्धा में भारतीय खिलाड़ियों ने कुल 85 पदक जीते। जिसमें 21 स्वर्ण, 27 रजत और 37 कांस्य पदक शामिल हैं। आइची-नागोया में संपन्न एशियाई खेलों के आखिरी दिनों में भारतीय खिलाड़ियों ने दमखम दिखा कर सोने के तमगों की संख्या बढ़ाई है। निस्संदेह, कह सकते हैं कि हम एशिया में पहले चार देशों में शुमार हैं। लेकिन यहां सवाल यह है कि भले ही हम चौथे स्थान पर रहे हैं, लेकिन इन खेलों में नंबर एक व दो रहे चीन व जापान के आगे हम कहाँ खड़े हैं? इस बारे भारतীয় खिलाड़ियों के प्रदर्शन ने यह भी सोचने को मजबूर किया कि आने वाले कुछ दशकों में भारत ओलंपिक की दावेदारी में कहाँ ठहरता है? वैसे इस बार के एशियाई खेलों से जुड़ी कुछ सुखद स्मृतियां भी हैं, मसलन तीरंदाजी में हमने नौ मेडल जीते हैं। जिसमें पांच स्वर्ण पदक शामिल हैं। सुखद यह भी है कि कुमकुम मोहोद रिकर्व कैटेगरी में भारत की पहली व्यक्तिगत उपलब्धि हासिल करने वाली खिलाड़ी बनीं। भारतीय खिलाड़ियों को बॉक्सिंग और रेसलिंग में क्रमशः तीन और दो स्वर्ण पदक मिले। वहीं दूसरी और प्रणवी उर्स एशियाई खेलों में व्यक्तिगत गोल्फ गोल्ड जीतने वाली पहली भारतीय महिला बनी हैं। वहीं दूसरी ओर इस बार भी भारतीय खिलाड़ियों ने क्रिकेट, हॉकी और कबड्डी में अपना वर्चस्व कायम रखा। महिला हॉकी में भारतीय खिलाड़ियों की उपलब्धि बहुत खास रही। उन्होंने अनुशासन और ऊंचे मनोबल के साथ बेहतर खेल का प्रदर्शन किया। भारतीय महिला हॉकी टीम ने मौजूदा चैंपियन चीन को हराकर एशियाई खेलों में स्वर्ण पदक का 44 साल का हमारा इंतजार खत्म किया। लेकिन हमारे खिलाड़ी एथलेटिक्स में हमारी उम्मीदों पर खरे नहीं उतरे। एकमात्र स्वर्ण महिलाओं की 4× 400 मीटर रिले रेस में हासिल हुआ। निशानेबाजों का प्रदर्शन भी उत्साह जगाने वाला नहीं रहा। इस बार हमें, पिछले ओलंपिक में दो कांस्य पदक जीतने वाली मनु भाकर ने निराश किया। वह इस बार खाली हाथ लौटी हैं। वैसे पिछली बार चीन में हुए एशियाई खेलों से तुलना करें तो इस बार हमारा प्रदर्शन फीका रहा। तब हमने 28 स्वर्ण पदकों के साथ 106 मेडल जीते थे। इस बार सात स्वर्ण समेत कुल 21 पदकों की कमी, हमारे खेल नीति-नियंताओं के लिये एक चेतावनी जैसी है। हालांकि, यह वक्त हमारे लिये नागोया में मिली कामयाबियों का जश्न मनाने का है। लेकिन हमें अपनी कमजोरियों को लेकर भी आत्ममंथन करने की जरूरत है। निस्संदेह, भारत में खेलों का भविष्य चंद खिलाड़ियों की कामयाबी से तय नहीं किया जा सकता है। हमें एशियाइ के बाद ओलंपिक के लिये युद्ध स्तर पर तैयारियां करनी होंगी। इस कामयाबी के लिये नई प्रतिभाओं की पहचान, विश्व स्तरीय प्रशिक्षण, मानसिक रूप से सशक्त खिलाड़ी तैयार करने तथा विश्वस्तरीय सपोर्ट सिस्टम बनाने की जरूरत होगी। इन एशियाई खेलों ने हमें हकीकत का आईना दिखाया है। अब हम अभी से वर्ष 2028 में लॉस एंजिल्स के ओलंपिक खेलों की तैयारी में जुट जाएं।



बांग्लादेश और भारत की राजनीतिक परिस्थितियां

(लेखक- सनत जैन)

बांग्लादेश और भारत की राजनीतिक परिस्थितियां एक जैसी नहीं हैं, फिर भी दोनों देशों की घटनाओं में एक महत्वपूर्ण समानता दिखाई देती है। जब जनता को यह महसूस होने लगे, चुनावी व्यवस्था और लोकतांत्रिक संस्थाएं निष्पक्ष नहीं रहीं, सारी संवैधानिक संस्थाएं सरकार के दबाव में काम करती हुई नजर आ रही हैं, तब असंतोष केवल राजनीतिक दलों तक सीमित नहीं रहता। जब यह असंतोष सड़क तक पहुंचता है, उसके बाद स्थितियां गंभीर होती चली जाती हैं। बांग्लादेश में जनवरी 2024 के चुनाव में शेख हसीना की लगातार चौथी सरकार के गठन का माध्यम बना। प्रमुख विपक्षी दल बीएनपी ने चुनाव का बहिष्कार किया था। सरकार पर विपक्ष को दबाने तथा चुनाव को प्रभावित करने के आरोप लगे थे। चुनाव के बाद भी असंतोष समाप्त नहीं हुआ। शेख हसीना की तानाशाही और भी बढ़ गई थी। जुलाई 2024 में सरकारी नौकरियों में आरक्षण के मुद्दे से शुरू हुआ, छात्र आंदोलन धीरे-धीरे सरकार- विरोधी आंदोलन में बदल गया। युवाओं की भीड़ सड़कों पर आ गई। पुलिस और सुरक्षाबलों की कार्रवाई में बड़ी संख्या में लोग मारे गए। अंततः सेना प्रमुख जनरल वाकर-उज्ज-जमान ने शेख हसीना सरकार के समर्थन में आंदोलन को बलपूर्वक दबाने को सेना ने इनकार कर दिया। 5 अगस्त 2024 को हसीना ने भारत में शरण ले ली।

इस कारण भारत और बांग्लादेश के संबंध भी खराब हुए। यहीं से भारत के लिए सबसे बड़ा लोकतांत्रिक सबक निकलता है। सरकारें केवल चुनाव जीतकर मजबूत नहीं होती है। सरकार की वास्तविक ताकत जनता के विश्वास में निहित है।

भारत में आज सरकार और संवैधानिक संस्थाओं के प्रति विश्वास का संकट है। भारत में सत्ता परिवर्तन के लिए संवैधानिक और लोकतांत्रिक रास्ते अभी भी मौजूद हैं। चुनाव आयोग द्वारा कराई जा रही स्पेशल डेंटेंसिव रिवीजन (एसआईआर) के बाद गंभीर संवैधानिक एवं राजनीतिक विवाद पैदा हो चुका है। 2017 के बाद से चुनाव आयोग की कार्यप्रणाली हमेशा विवादों में रही है। पूर्व मुख्य चुनाव आयुक्त राजीव कुमार और वर्तमान मुख्य चुनाव आयुक्त ज्ञानेश कुमार ने अपनी संवैधानिक शक्तियों का दुरुपयोग कर सत्ताधारी पार्टी को मदद के लिए किया है। एसआईआर में न्यायपालिका की भूमिका भी सरकार के दबाव में हैं। भारतीय निर्वाचन आयोग के आंकड़ों के अनुसार विभिन्न राज्यों में ड्रापट मतदाता सूचियों से 13 करोड़ से अधिक मतदाताओं के नाम हटाए गए हैं। आयोग का तर्क है, इनमें मृतक, स्थानांतरित, दोहरी प्रविष्टियों तथा अन्य कारणों से अयोग्य मतदाता शामिल हैं। लेकिन जिस तरह से फॉर्म 6 और फॉर्म 7 की गड़बड़ी उजागर हुई है, उसके बाद चुनाव आयोग पूरी तरह से निशाने पर आ गया

है। आम मतदाताओं, विपक्ष और नागरिक समूहों का आरोप है, प्रक्रिया में वास्तविक मतदाताओं के नाम सत्तारूढ़ पार्टी को जिताने के लिए हटाए गए हैं। इससे लोकसभा और कई राज्यों के चुनावों को प्रभावित किया गया है। सबसे गंभीर प्रश्न केवल 13 करोड़ नाम हटाए जाने का नहीं है, 2024 को 18 साल की उम्र पूरी कर चुके युवाओं के नाम भी मतदाता सूची में नहीं जोड़े गए हैं। पात्र नागरिकों का वोट हिन्ने से पहले सत्यापन, सुनवाई और अपील की प्रक्रिया पारदर्शी और प्रभावी नहीं रही। भारत में जन्में भारतीय नागरिकों के ही नाम मतदाता सूची से हटा दिए गए। उनमें भी एक अल्पसंख्यक समुदाय के सबसे ज्यादा हटाए गए हैं। पश्चिम बंगाल में आयोग ने सुप्रीम कोर्ट को बताया, लगभग 38.31 लाख अपीलें ट्रिब्यूनल में दायर हुई हैं, जिनमें 22.21 लाख से अधिक अपीलें हटाए गए मतदाताओं द्वारा नाम वापस जोड़ने के लिए की गई थीं। जो आज भी लंबित पड़ी हुई हैं। इसी बीच चुनाव भी हो गए। विवाद को और गंभीर बनाने वाली बात चुनाव आयोग के भीतर से सामने आए मतदान हैं। इंडियन एक्सप्रेस में प्रकाशित समाचार और जांच के अनुसार चुनाव आयुक्त सुखबीर सिंह स्र्रा और विवेक जोशी ने दस महीनों में कम से कम 14 बार चुनाव आयोग द्वारा लिए गए निर्णय और प्रक्रियाओं पर लिखित आपत्तियां दर्ज कीं। आयोग ने इन टिप्पणियों को निर्णय प्रक्रिया का हिस्सा बताते हुए कहा है, अंतिम निर्णय

सर्व सम्मति से हुए। इसके बाद से पुरे देश भर में बवाल मचा हुआ है।

विपक्ष को लगता है, मतदाता सूची में हेरफेर हुआ है। चुनाव में गड़बड़ी की गई है, तो उसका उत्तर सड़क पर नहीं बल्कि दस्तावेज, जांच, न्यायिक समीक्षा और पारदर्शी चुनावी प्रक्रिया से विपक्ष को मिलना चाहिए। चुनाव आयोग को विपक्ष के साथ संवाद करना चाहिए। विपक्ष और आम जनता को भी विश्वास में लेना चाहिए था। न्यायपालिका को भी अपनी भूमिका अदा करनी थी, लेकिन पिछले दो- द्वाई वर्षों से सब अपनी अपनी भूमिका से नदारत हैं। यदि चुनाव आयोग पर आरोप गलत हैं, तो आयोग को आंकड़े, प्रक्रिया और निर्णय सार्वजनिक करके जनता का विश्वास जीतना चाहिए। यदि वास्तविक गड़बड़ी हुई है, तो उसे सुधारना चुनाव आयोग की कमजोरी नहीं, बल्कि लोकतंत्र की मजबूती होगी। आज दिल्ली से मुंबई और देश के कई हिस्सों में चुनाव आयोग और मुख्य चुनाव आयुक्त ज्ञानेश कुमार के खिलाफ प्रदर्शन हो रहे हैं। 2 अक्टूबर को दिल्ली में लगभग 500 प्रदर्शनकारियों को हिरासत में लिया गया। 4 अक्टूबर को मुंबई में उड़द ठाकरे और राज ठाकरे ने संयुक्त प्रदर्शन कर मुख्य चुनाव आयुक्त के इस्तीफे की मांग की है। प्रदर्शन के दौरान न्यायापालिका की भूमिका को लेकर भी भीड़ सड़कों पर है। भारत और बांग्लादेश के बीच वर्तमान आंदोलन को देखते हुए समानता दिखने लगी है।



क्रिएटिविटी एक ऐसी चीज है, जो आपको जीवन में और बेहतर बनाता है। हालांकि यह एक गलत धारणा है कि रचनात्मकता एक जन्मजात प्रतिभा है। इसमें आप खुब सारे आइडियाज और इमेजिनेशन का यूज करते हैं और कुछ शानदार आर्ट के साथ आते हैं। हमारी शिक्षा, लाइफ और करियर में क्रिएटिविटी एक बहुत महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। लेकिन यह बात छोटे बच्चे को आप कैसे समझाएं? अब समर वेकेशन शुरू हो चुकी है और ऐसे में पैरेंट्स यही सोचते हैं कि इन छुट्टियों को बच्चों के लिए कैसे प्रोडक्टिव बनाएं। अपने बच्चों को क्रिएटिव थिंकिंग के लिए कैसे प्रोत्साहित करें यह हर मां-बाप सोचता है। सीनियर क्लीनिकल साइकोलॉजिस्ट कहती हैं, ‘बच्चों को नई चीजों को आजमाने के लिए प्रोत्साहित करना चाहिए। उन्हें उन चीजों के बारे में बताएं और वो चीजें करने के लिए प्रेरित करें, जो उनकी स्कूल करिकुलम का हिस्सा न हों। उनके साथ डॉक्यूमेंट्री देखें और उनसे डॉक्यूमेंट्री के बारे में पूछें।’ आइए एक्सपर्ट से जानें कि बच्चों को और किन तरीकों से प्रेरित किया जा सकता है।

बच्चों को सवाल पूछना सिखाएं

बच्चों में रचनात्मक सोच विकसित करने का एक मेन तरीका यह है कि उन्हें हमेशा सवाल करते रहने के लिए प्रेरित करें। जब भी आप उनके साथ समय बिता रहे हों तो उनसे सवाल पूछें। जैसे आप उनसे छोटे-छोटे सवाल कर सकते हैं। ऐसे में उनके मन में जिज्ञासा बनेगी और वह नई चीजों के बारे में समझने की कोशिश करेंगे। इससे उनके कल्पनाशील कौशल में वृद्धि होगी और समस्या को सुलझाने की क्षमता विकसित होगी।

अच्छी डॉक्यूमेंट्रीज दिखाएं

एक शॉर्ट डॉक्यूमेंट्री स्टोरी स्टैंटट्स की लिटरैसी को सोर्स, स्वयं से और दुनिया से

फर्नीचर हर घर की जरूरत है। आमतौर पर, लोग अपने घर के लिए ऐसे फर्नीचर खरीदना पसंद करते हैं, जो देखने में आकर्षक भी हों और बेहद अफोर्डेबल भी हों। इस लिहाज से प्लास्टिक के फर्नीचर का चयन करना एक अच्छा ऑप्शन माना जाता है। इनमें आपको डिजाइन से लेकर साइज व कलर आदि में एक बिग वैरायटी देखने को मिलेगी।

यूं तो प्लास्टिक के फर्नीचर का इस्तेमाल करने में कोई समस्या नहीं है। लेकिन अगर आप प्लास्टिक के फर्नीचर को घर में जगह दे रही हैं, तो आपको वास्तु के कुछ नियमों का ध्यान रखना चाहिए। दरअसल, प्लास्टिक के फर्नीचर को अगर घर में सही तरह से ना रखा जाए तो यह कभी-कभी नकारात्मकता भी पैदा कर सकते हैं। तो चलिए आज इस लेख में आपको वास्तुशास्त्री डॉ. आनंद भारद्वाज बता रहे हैं कि घर में प्लास्टिक के फर्नीचर रखते समय किन वास्तु टिप्स का ख्याल रखा जाना चाहिए

कलर का रखें ख्याल

जब आप प्लास्टिक के फर्नीचर का इस्तेमाल



घर में प्लास्टिक फर्नीचर रखते समय वास्तु के इन टिप्स का रखें ध्यान

कर रही हैं, तो आपको इस बात का विशेष रूप से ध्यान रखना चाहिए कि उस फर्नीचर का कलर कैसा है। आमतौर पर, प्लास्टिक के फर्नीचर के लिए क्रीम, व्हाइट, येलो और लाइट कलर का इस्तेमाल करना काफी अच्छा माना जाता है। कभी भी ब्लैक कलर के प्लास्टिक फर्नीचर को घर में नहीं रखना चाहिए। वहीं, आजकल ऐसे प्लास्टिक फर्नीचर भी अवेलेबल हैं, जिसमें एक साथ कई कलर मिक्स होते हैं, बेहतर होगा कि आप उसे भी अवॉयड करें।

जब करें स्टडी

आजकल बच्चों की स्टडी टेबल और चेयर प्लास्टिक की मिलती हैं, जिन्हें लोग खरीदना काफी पसंद करते हैं। लेकिन वास्तु के अनुसार बच्चों की

तरीका है। अपने बच्चों के साथ कोई भी डॉक्यूमेंट्रीज देखें तो उसकी चर्चा करें। उन्होंने इससे क्या सीखा और क्या समझा जानने की कोशिश करें।

उनके साथ विजज और पजल खेलें

विजज और पजल जैसे गेम बच्चों के दिमागी विकास के लिए महत्वपूर्ण हैं। पजल आपके बच्चे की समस्या-समाधान और क्रिटिकल थिंकिंग स्किल को विकसित करती हैं, जो बाद में जीवन में अन्य स्किल की महारत के लिए महत्वपूर्ण होती हैं। पजल्स बच्चों को पैटर्न रिकग्निशन, मेमोरी और ग्रॉस और फाइन मोटर स्किल दोनों में मदद कर सकती हैं। इसलिए उनके साथ पजल खेलें।

आउटडोर गेम खिलाएं

अपने बच्चों को घर में रहने के लिए ही न कहें। उन्हें बाहर निकालें और कई फन एक्टिविटीज में उन्हें शामिल होने के लिए कहें। बच्चों के साथ आउटडोर गेम्स खेलें। ऐसे में उनकी एक्सरसाइज भी होगी और वे कुछ नया भी सीखेंगे। आप उन्हें तैराकी करने के लिए प्रेरित कर सकते हैं। किसी गेम में जैसे क्रिकेट, फुटबॉल, बैडमिंटन आदि जैसे खेलों में शामिल होने के लिए कह सकते हैं।



हमारी शिक्षा, लाइफ और करियर में क्रिएटिविटी एक बहुत महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। लेकिन यह बात छोटे बच्चे को आप कैसे समझाएं? अब समर वेकेशन शुरू हो चुकी है और ऐसे में पैरेंट्स यही सोचते हैं कि इन छुट्टियों को बच्चों के लिए कैसे प्रोडक्टिव बनाएं।

बच्चों में रचनात्मकता को प्रोत्साहित करने के ये हैं बेस्ट तरीके



सामाजिक और भावनात्मक कौशल सिखाएं

अपने बच्चों सामाजिक और भावनात्मक कौशल सिखाना भी बहुत जरूरी है। उन्हें पशु आश्रयों और वृद्धाश्रमों जैसी जगहों पर ले जाएं और स्वयं सेवा का महत्व सिखाएं। जब बच्चे ऐसा करेंगे तो वह औरों के प्रति भी सेंसेटिव अप्रोच रखने में सक्षम होंगे। ऐसी जगहों पर वे महत्वपूर्ण सामाजिक और भावनात्मक कौशल सीख सकेंगे और साथ ही समाज में भी योगदान दे सकेंगे।

नींद में न करें लापरवाही

इन सबके बाद सबसे महत्वपूर्ण चीज है कि आपका बच्चा पूरी और अच्छी नींद ले। अच्छी नींद का मतलब है कि उसके दिमाग को बेहतर आइडियाज उत्पन्न करने के लिए और नई चीजों पर काम करने के लिए समय मिलेगा। इनोवेटिव आइडियाज तभी आएंगे जब उसके दिमाग को शांति मिलेगी। बाकी एक्टिविटी के साथ उसकी नींद का भी पूरा ध्यान दें।



घर में लगाएं ये फूल तनाव होगा दूर, भीनी-भीनी खुशबू से आएंगी जीवन में खुशियां

आजकल के भागदौड़ भरे जीवन में सुकून के दो पल चुराना बेहद मुश्किल हो गया है। बिजी लाइफ स्टाइल की वजह से लोग अक्सर तनाव में रहते हैं। ऐसे में इस तनाव को दूर करने के लिए अधिकतर लोग शहर से दूर बाहर किसी हिल स्टेशन पर जाना पसंद करते हैं। लेकिन हर कोई टेशन कम करने के लिए हिल स्टेशन नहीं जा सकते हैं। लेकिन इसका ये मतलब नहीं है कि आप तनाव में रहें। आप जीवन की टेशन को घर में ही कम कर सकते हैं। आपके दिमाग में भी यहीं सवाल आया होगा कि कैसे टेशन कम होगी? घबराइए मत हम आपके सारी उलझन को दूर कर देंगे। इस लेख में हम आपको कुछ फूल के बारे में बताएंगे, जो आपके घर में खुशियां लेकर आएंगे। साथ ही यह फूल घर के साथ-साथ जीवन को भी महका देंगे।

चमेली

फूल न केवल घर की सुंदरता को बढ़ाते हैं बल्कि घर का वातावरण भी शुद्ध होता है। ऐसे में आप अपने घर में चमेली के फूल का पौधा लगा सकते हैं। चमेली का फूल अक्सर हर घर में मिल जाता है। इस फूल से पॉजिटिव एनर्जी मिलती है। फूल की भीनी-भीनी खुशबू आपके घर को खुशनुमा माहौल देगी। कहा जाता है कि चमेली का पौधा लगाने से घर में खुशियां आती हैं।

कमल

हिंदू धर्म में कमल का फूल बेहद खास माना जाता है। यह फूल मां लक्ष्मी को बेहद प्रिय है। कहा जाता है कि इस फूल को लगाने से घर में लक्ष्मी और सुख-समृद्धि आती है। घर में इस पौधे को लगाना बेहद शुभ माना जाता है।

मोगरा का फूल

ऐसा कहा जाता है कि घर में मोगरा पौधा

लगाने से नकारात्मक ऊर्जा कम हो जाती है। मोगरे के फूल गर्मियों के मौसम में खिलता है। इस फूल की भीनी-भीनी खुशबू आपके तनाव को कम कर देंगे। मोगरा के फूल की खुशबू से घर आपके मन को तराताजा कर देंगी।

गुलाब

गुलाब का फूल न केवल दिखने में खूबसूरत है बल्कि यह फूल औषधीय गुण से भरपूर है। गुलाब की खुशबू तनाव को दूर करने में मदद करती है, साथ ही इससे रिश्ते की मिठास बनी रहती हैं।

चम्पा

चम्पा फूल को लगाने से घर का वातावरण शुद्ध होता है। हल्के पीले और सफेद रंग के ये चम्पा के फूल बहुत ही खूबसूरत होते हैं। इस फूल को लगाने से घर में सौभाग्य आता है।

गुड़हल का फूल

गुड़हल के फूल का उपयोग पूजा-पाठ में किया जाता है। भगवान गणेश को लाल गुड़हल के फूल बेहद पसंद है। ऐसा माना जाता है कि इस फूल को घर में लगाने से सकारात्मक ऊर्जा आती है। लाल गुड़हल के फूल को आप भगवान बजरंगबली को भी अर्पित कर सकते हैं।

पारिजात

ऐसा माना जाता है कि पारिजात का फूल लगाने से घर में सुख-शांति बनी रहती है। यह फूल रात के समय में खिलते हैं सुबह पेड़ से टूटकर गिर जाते हैं। इस फूल की खुशबू से पूरा घर महक जाता है। सुबह-सुबह घर में भीनी-भीनी खुशबू से घर में सकारात्मक ऊर्जा बनी रहती है। पारिजात के फूल को हरसिंगार के नाम से भी जाना जाता है। इस फूल की खुशबू से तनाव कम हो जाता है।



1 नहीं बल्कि 3 तरीकों से उगाया जा सकता है फ्रेश हरा धनिया

भारतीय घरों में खाने का जायका बढ़ाने के लिए हरा धनिया का इस्तेमाल किया जाता है। इसलिए हर रसोई में खाने में स्वाद और पलेवर के लिए फ्रेश धनिया गार्निश के लिए डाला जाता है। हालांकि, हर वक्त फ्रेश धनिया लाना थोड़ा मुश्किल हो जाता है। लेकिन अगर हम आपसे कहें कि आप घर में ही फ्रेश धनिया उगा सकती हैं और वो भी 3 तरीकों से। जी हां, आपने सही पढ़ क्योंकि आज आप इस लेख में जानने वाले हैं घर पर आसानी से हरा धनिया कैसे उगाया जा सकता है

सीड्स से उगाएं हरा धनिया

आप अपने गार्डन में हरा धनिया बीज की सहायता से लगा सकती हैं। (सहेत के लिए वरदान है हरा धनिया, डाइट में जरूर करें शामिल) आपको किसी भी प्लांट की शॉप से बीज आसानी से मिल जाएंगे, जिसे आप किसी गमले, कंटेनर या फिर प्लास्टिक की बोतल में मिटटी की मदद से पौधा लगा सकती हैं। हालांकि, पौधे की ग्रोथ तभी होगी जब आप इसका नियमित रूप से ध्यान रखेंगी जैसे- आप मिटटी की नमी पर ध्यान दें, पौधे में नियमित रूप से पानी डालें।

कटिंग से उगाएं हरा धनिया

आप अपने किचन में भी हरा धनिया का पौधा लगा सकती हैं। इसके लिए, आपको बस धनिये के पत्ते की जरूरत होगी। हालांकि, इसके पौधे को सही तरीके से लगाने के लिए आपको मिटटी सही तरीके से तैयार करनी होगी। साथ ही, आपको बाजार से गमला

खरीदकर लाना होगा और इसमें मिटटी और खाद की मदद से कटिंग लगानी होगी। **हरा धनिया की जड़ का करें इस्तेमाल**

बहुत-सी महिलाएं हरा धनिये की जड़ को बेकार समझकर फेंक देते हैं। लेकिन क्या आपको पता है कि आप इसकी जड़ की सहायता से फ्रेश हरा धनिया भी उगा सकती हैं। कहा जाता है कि जड़ से उगाया गया पौधा बीज से ज्यादा अच्छा होता है। साथ ही, इसकी ग्रोथ भी अच्छी होती है। इसके लिए बस आपको मिटटी में जड़ को बोना है और नियमित तौर पर पानी डालना है।

धनिया उगाने का आसान तरीका

आवश्यक सामग्री- कंटेनर/गमला/प्लास्टिक की बोतल, मिटटी और खाद, कटिंग/बीज, पानी **विधि -** पौधा लगाने के लिए सबसे पहले आपको गमले का चुनाव करना होगा। आप छोटा गमला सेलेक्ट कर सकती हैं। गमले का चुनाव करने के बाद आप इसमें मिटटी डालें और अच्छी तरह से मिला लें। आप पौधे की मिटटी तैयार करते समय 50% कोको-पीट और 50% वर्मीकम्पोस्ट का इस्तेमाल कर सकती हैं। मिटटी तैयार करने के बाद आप इसमें पौधे की कटिंग, बीज को अच्छी तरह से लगा दें। कटिंग या बीज को लगाने के बाद आप पौधे में पानी डालें।

बस आपको पौधा पूरी तरह से तैयार है। आप इसका नियमित रूप से ध्यान रखें और फ्रेश हरा धनिया आने का इंतजार करें।



फर्जी डिग्री से डॉक्टर बना

भारतीय मूल का दक्षिण अफ्रीकी, गिरफ्तार

डरबन , एंजेसी। भारतीय मूल के 39 वर्षीय रेशल दयानंद पर फर्जी मेडिकल डिग्री से डॉक्टर के रूप में पंजीकरण और अस्पताल में इंटर्न के तौर पर काम करने का आरोप है। बुधवार को डरबन की विशेष वाणिज्यिक अपराध अदालत में उसपर जालसाजी, धोखाधड़ी और स्वास्थ्य पेशा अधिनियम व इलेक्ट्रॉनिक संचार और लेनदेन अधिनियम के उल्लंघन का आरोप लगा। उसे चेतावनी देकर रिहा कर दिया गया। क्वाजुलु-नटाल पुलिस प्रवक्ता लेफ्टिनेंट कर्नल सिमफ्रव मलोगो ने स्थानीय दैनिक द वित्नेस को बताया कि मामला 19 नवंबर, 2026 तक टाल दिया गया है। दयानंद ने क्वाजुलु-नटाल विश्वविद्यालय में बैचलर ऑफ मेडिसिन और बैचलर ऑफ सर्जरी की डिग्री पूरी नहीं की। 2013 में उसे बाहर किया गया था, फिर 2015 में प्रवेश मिला, पर वह एक अंतिम मॉड्यूल पास नहीं कर सका। डिग्री के बिना भी, दयानंद ने 2016 में हेल्थ प्रोफेशनस काउंसिल ऑफ साउथ अफ्रीका में अवैध पंजीकरण कराया। उसने नॉर्थवेस्ट अस्पताल में इंटर्नशिप की। अधिकारियों का आरोप है कि उसने विश्वविद्यालय के एक अधिकारी के साथ मिलकर फर्जी शैक्षणिक प्रतिलेख और डिग्री प्रमाण पत्र बनाए।

तूफान के चलते 550 साल पुराना होलेई सी आर्च समुद्र में समाया

वाशिंगटन, एंजेसी। प्रशांत महासागर में उठे भीषण चक्रवाती तूफान के दौरान हवाई वोल्कनो नेशनल पार्क का 550 साल पुराना होलेई सी आर्च ढहकर समुद्र में समा गया। करीब 90 फीट ऊंची यह प्राकृतिक चट्टानी मेहराब सदियों से समुद्र की लहरों के बीच खड़ी थी और पर्यटकों व फोटोग्राफरों के लिए आकर्षण का प्रमुख केंद्र थी। अमेरिकी नेशनल पार्क सर्विस (एनपीएस) ने इसके ढहने की पुष्टि की है।

सरकार की सख्ती के बाद एपल ने भारत में अपने एप स्टोर से बिटचैट हटाया

वाशिंगटन, एंजेसी। एपल ने भारत में ऑफलाइन मैसैजिंग एप बिटचैट को अपने एप स्टोर से हटा दिया है। एप के डेवलपर जैक डोर्सी ने शनिवार को सोशल मीडिया पोस्ट के जरिये इसकी जानकारी दी। उन्होंने कहा कि यह कार्रवाई सूचना प्रौद्योगिकी मंत्रालय की मांग पर की गई है। उन्होंने एपल की एप रिव्यू टीम की ओर से भेजे गए डिमंड्स का स्क्रीनशॉट भी साझा किया। एपल के नोटिस के अनुसार, भारत में एप स्टोर इसलिए हटाया गया क्योंकि इसमें ऐसा कंटेंट शामिल है जिसे भारत में अवैध माना गया है। यह एप रिव्यू गाइडलाइन्स के अनुरूप नहीं है। कंपनी ने यह भी कहा कि डेवलपर एप को हटाए जाने या भारत के कानूनों और आवश्यकताओं के बारे में अधिक जानकारी के लिए सीधे मंत्रालय से संपर्क कर सकता है। बिटचैट दूसरे देशों के एप स्टोर पर उपलब्ध रहेगा। भारत में इसका टेस्ट प्लाइंड संस्करण भी उपलब्ध नहीं रहेगा और सार्वजनिक टेस्टप्लाइड लिंक काम नहीं करेगा। बिटचैट पर सरकार की कार्रवाई का यह दूसरा मामला है। इससे पहले जुलाई में भारतीय साइबर अपराध समन्वय केंद्र (आई4सी) ने माइक्रोसॉफ्ट के स्वामित्व वाले गिटहब को बिटचैट हटाने का निर्देश दिया था। उस समय डोर्सी ने सरकार के कदम पर आपत्ति जताते हुए कहा था कि भारत सरकार बिटचैट जैसी तकनीकों को पसंद नहीं करती और इसे हटाना चाहती है। बिटचैट ब्लूटूथ आधारित विकेंद्रीकृत नेटवर्क के जरिये आसपास के उपकरणों के बीच सीधे संचार की सुविधा देता है।

फ्रांस छत्र आंदोलन बेकाबू अब तक 5000 गिरफ्तार

पेरिस, एंजेसी। फ्रांस में कक्षाओं की बदतर स्थिति, फंड की कमी और शिक्षकों की भारी कमी के खिलाफ चल रहा छत्र आंदोलन अब पूरी तरह हिंसक रूप ले चुका है। स्थिति इतनी बिगड़ गई है कि पेरिस के पुलिस प्रमुख से इसे नियंत्रण से बाहर करार दिया है। अधिकारियों ने प्रदर्शनकारियों से शांतिपूर्ण तरीके से अपनी बात रखने की अपील की है और चेतावनी दी है कि हिंसा और तोड़फोड़ से अब पूरी सख्ती से निपटा जाएगा। पिछले सोमवार से लेकर अब तक देश भर में लगभग 5,000 लोगों को गिरफ्तार किया जा चुका है, जिनमें से ज्यादातर किशोर हैं। शुक्रवार को पूरे फ्रांस में दंगा रोधी पुलिस और हाई स्कूल के छात्रों के बीच भीषण झड़पें हुईं। इस हिंसा में दर्जनों लोग घायल हुए हैं।

अमेरिका ने ईरान के दो राजनयिकों को निकाला:आदेश मिलने के बाद भी न्यूयॉर्क में रुके रहे

वांशिंगटन एंजेसी। अमेरिका ने ईरान के दो राजनयिकों को देश से बाहर भेज दिया है। दोनों संयुक्त राष्ट्र महासभा में शामिल होने के लिए न्यूयॉर्क पहुंचे थे, लेकिन महासभा खत्म होने के बाद भी वहीं रुके रहे। एक्सओस की रिपोर्ट के मुताबिक, अमेरिकी विदेश विभाग ने सोमवार को न्यूयॉर्क स्थित ईरानी मिशन को निर्देश दिया था कि यूएन महासभा में शामिल होने आए उसके प्रतिनिधिमंडल के सभी सदस्य अमेरिका से रवाना हो जाएं।

ज्यादातर प्रतिनिधि चले गए, लेकिन दो राजनयिक न्यूयॉर्क में ही रुके रहे। शुक्रवार को अमेरिकी अधिकारियों ने ईरानी मिशन को बताया कि उन्हें दोनों के अब भी

न्यूयॉर्क में मौजूद होने की जानकारी है। इसके बाद ईरान को दोबारा संदेश भेजकर दोनों राजनयिकों को तुरंत अमेरिका छोड़ने के लिए कहा गया। इसके बाद एक राजनयिक शुक्रवार रात और दूसरा शनिवार सुबह न्यूयॉर्क से रवाना हो गया।

अमेरिका से जंग के बावजूद न्यूयॉर्क गए थे ईरानी राष्ट्रपति : ईरान और अमेरिका में जंग के बावजूद ईरानी राष्ट्रपति मसूद पजशकियान यूएन महासभा में शामिल होने न्यूयॉर्क पहुंचे थे। 23 सितंबर को यहां उन्होंने दुनिया के सामने ईरान का पक्ष रखा और अमेरिका-इजराइल पर कई गंभीर आरोप लगाए। पजशकियान अपने भाषण में युद्ध

हादसे का शिकार हुई एयर एम्बुलेंस: बरमूडा से बोस्टन की उड़ान के दौरान टूटा संपर्क, नैनटकेट के पास मिला मलबा

न्यूयॉर्क , एंजेसी। अमेरिका के मैसाचुसेट्स के नैनटकेट तट के पास एक एयर एम्बुलेंस का मलबा मिला है। यह एयर एम्बुलेंस शनिवार को बरमूडा से बोस्टन की उड़ान के दौरान अटलांटिक महासागर के ऊपर गायब हो गई थी। इसमें छह लोग सवार थे। यह जानकारी अमेरिकी कोस्ट गार्ड ने दी। कोस्ट गार्ड ने एक बयान में कहा कि इसमें चार कनाडाई और दो बरमूडा के नागरिक सवार थे। खोज जारी रहने के दौरान उनके करीबी रिश्तेदारों को सूचित कर दिया गया था। उन्होंने आगे कहा कि उनका एक जहाज रात भर और रविवार को भी पानी में खोज जारी रखा।

विमान में क्या दिक्कत थी : एयर ट्रेफिक ऑडियो से पता चलता है कि मेडिकल ट्रांसपोर्ट विमान में शायद बिजली से जुड़ी समस्याएं थीं। वह बिना नेविगेशन के (ब्लाईंड) आ रहा था, तभी शनिवार तड़के गायब होने से कुछ देर पहले ही सामने एक तूफान आ गया।

ट्रेफिक कंट्रोल ऑडियो से क्या पता चला : एयर ट्रेफिक कंट्रोल ऑडियो के अनुसार, जब जेट तट के पास पहुंचा तो पायलट ने बिजली से जुड़ी समस्याओं की सूचना दी और इमरजेंसी घोषित कर दी। एक कंट्रोलर को पायलट से यह पूछते हुए सुना जा सकता है, ‘रोजर, आपने कहा कि आप बिना नेविगेशन के आ रहे हैं। क्या आपने यही कहा था प्लाइटरडार24 की डेटा से क्या पता चला?’ इससे मैरी शियावो, जो ट्रांसपोर्टेशन डिपार्टमेंट की



पूर्व इंस्पेक्टर जनरल हैं, उनको लगता है कि हो सकता है कि विमान के नेविगेशन इंस्ट्रुमेंट तब काम करना बंद कर गए हों, जब रडार पर उसके रास्ते में एक तूफान आया। फ्लाइट ट्रेकिंग साइट प्लाइटरडार24 के शुरूआती डेटा के अनुसार, विमान अपनी लगभग 24,000 फीट की ऊंचाई से तेजी से नीचे आकर लगभग 10,000 फीट की ऊंचाई पर आ गया था।

एविएशन अटॉर्नी शियावो ने क्या बताया : एविएशन अटॉर्नी शियावो ने कहा, ‘इस बड़ी गिरावट के साथ कुछ बुरा हुआ। वे उस बड़े तूफान में चले गए। इंस्ट्रुमेंट खराब होने और बिना नेविगेशन के उड़ान भरने के लिए यह एक बहुत ही खतरनाक जगह है। दिशा का पता न चलना बहुत आसान है और यह पता नहीं चल पाता कि आप मुड़ रहे हैं, ऊपर जा रहे हैं, नीचे आ रहे हैं, आदि। स्पेशल ऑपरेशन (स्थान का सही अंदाजा) बहुत जल्दी खत्म हो जाता

इंडोनेशिया में भूकंप के तेज झटके, 5.2 तीव्रता ने लोगों में फैलाई दहशत;

नुकसान की कोई खबर नहीं

जकार्ता , एंजेसी। इंडोनेशिया में आज सुबह करीब 5 बजे 5.2 तीव्रता का भूकंप महसूस किया गया। जानकारी के अनुसार इसका केंद्र 10 किलोमीटर की गहराई पर था। नेशनल सिस्मोलॉजिकल सेंटर के अनुसार, भूकंप की तीव्रता 5.2 थी। यह भूकंप रविवार सुबह 5:07 बजे आया। रिक्टर स्केल पर 5.2 तीव्रता वाले एक जबरदस्त भूकंप ने इंडोनेशिया को हिला दिया, जिससे लोगों में डर का माहौल बन गया।

लोगों में घबराहट फैल गई : सुबह जब भूकंप आया, तो ज्यादातर लोग घरों के अंदर थे। तेज झटकों से लोगों में घबराहट फैल गई और वे बाहर की ओर भागे, जिससे हर तरफ डर का माहौल बन गया। इंडोनेशिया को भूकंप के लिहाज से संवेदनशील इलाका माना जाता है। भूकंप के असर को समझने के लिए उसकी तीव्रता और गहराई को जानना जरूरी होता

है। इस भूकंप से नुकसान को लेकर अभी तक कोई जानकारी नहीं है। साथ ही जान-माल के नुकसान के बारे में भी कोई खबर नहीं है। वैज्ञानिकों ने भूकंप के दौरान लोगों को अपने बचाव के लिए कुछ उपाय बताया गया है। जिसका पालन करने से लोग सुरक्षित रह सकते हैं। कुछ दिन पहले पेरू में 6.7 तीव्रता का भूकंप आया था। दक्षिणी पेरू में जोरदार झटके महसूस किए गए। पेरू की दक्षिणी एंडीज पर्वत श्रृंखला में 6.7 तीव्रता का भूकंप आया। इका और अरेकिया समेत कई इलाकों में झटके महसूस किए गए। अब तक किसी बड़े नुकसान या जान-माल के नुकसान की कोई खबर नहीं है। रूजियोलॉजिकल सर्वे के मुताबिक, भूकंप स्थानीय समयानुसार दोपहर 1 बजे आया। इसका केंद्र अथाकुचो क्षेत्र के पारिनाकोचास डिपार्टमेंट में उपडुआचो से लगभग 38 किलोमीटर उत्तर-पश्चिम में था।

नेतन्याहू ने कैप्टन स्मित को इजरायली स्वतंत्रता दिवस समारोह में शामिल करने का दिया आमंत्रण

येरुशलम, एंजेसी। इजरायल के प्रधानमंत्री बेंजामिन नेतन्याहू ने शनिवार देर रात भारतीय पायलट स्मित मच्छर से बात की। इजरायली प्रधानमंत्री कार्यालय के अनुसार, पीएम नेतन्याहू ने उन्हें इजरायल के स्वतंत्रता दिवस समारोह में मशाल जलाने के लिए आमंत्रित किया। बातचीत के दौरान प्रधानमंत्री नेतन्याहू ने स्मित मच्छर से कहा, ‘मैं चाहूंगा कि कैप्टन स्मित और पीएम मोदी हमारे स्वतंत्रता दिवस पर जश्न की लौ थामे रहें। यह हमारा सबसे बड़ा सम्मान है। हम आमतौर पर इसे इजरायली नागरिकों के लिए रखते हैं, लेकिन इस मामले में इजरायल के सभी नागरिक आपको गले लगाएंगे।’ स्मित मच्छर, जो वर्तमान में दुबई में कार्यरत हैं ने बुधवार को दुबई से तेल अवीव जा रही फ्लाइटदुबई की फ्लाइट



के कॉकपिट के अंदर अपने सह-पायलट द्वारा हमला किए जाने के बाद, एक बड़े हादसे को टाल दिया। गंभीर चोट लगने के बावजूद भारतीय पायलट ने कॉकपिट का दरवाजा खोलने में कामयाबी हासिल की, जिससे यात्री और क्रू मेंबर हसक्षेप

कर सके। ऐसे में उन्होंने विमान के यात्रियों की जान बचा ली। वहीं, इससे पहले दुबई के क्राउन प्रिंस और संयुक्त अरब अमीरात (यूएई) के उप प्रधानमंत्री हमदान बिन मोहम्मद ने शनिवार को फ्लाइटदुबई की उड़ान एफजेड1073 के बहादुर भारतीय

कर सके। ऐसे में उन्होंने विमान के यात्रियों की जान बचा ली। वहीं, इससे पहले दुबई के क्राउन प्रिंस और संयुक्त अरब अमीरात (यूएई) के उप प्रधानमंत्री हमदान बिन मोहम्मद ने शनिवार को फ्लाइटदुबई की उड़ान एफजेड1073 के बहादुर भारतीय कर सके। ऐसे में उन्होंने विमान के यात्रियों की जान बचा ली। वहीं, इससे पहले दुबई के क्राउन प्रिंस और संयुक्त अरब अमीरात (यूएई) के उप प्रधानमंत्री हमदान बिन मोहम्मद ने शनिवार को फ्लाइटदुबई की उड़ान एफजेड1073 के बहादुर भारतीय कर सके। ऐसे में उन्होंने विमान के यात्रियों की जान बचा ली। वहीं, इससे पहले दुबई के क्राउन प्रिंस और संयुक्त अरब अमीरात (यूएई) के उप प्रधानमंत्री हमदान बिन मोहम्मद ने शनिवार को फ्लाइटदुबई की उड़ान एफजेड1073 के बहादुर भारतीय



में मारे गए बच्चों की तस्वीरें भी लेकर पहुंचे थे। उन्होंने कहा कि ईरान ने पिछले 200 साल में किसी देश पर हमला नहीं किया है, बल्कि उसका देश खुद आतंकवाद और हमलों का शिकार रहा है। उन्होंने अमेरिका और इजराइल पर ईरान के खिलाफ कार्रवाई करने का आरोप लगाया। पजशकियान ने यह भी

साफ किया कि ईरान परमाणु हथियार नहीं चाहता, लेकिन शांतिपूर्ण परमाणु तकनीक के इस्तेमाल का अधिकार नहीं छोड़ेगा। इसके अलावा उन्होंने पश्चिमी देशों पर दोहरे खवैये और ईपान पर लगाए गए प्रतिबंधों को लेकर भी सवाल उठाए।

यूएन महासभा में विदेशी प्रतिनिधियों के लिए तय

एयर ट्रेफिक कंट्रोल से बातचीत की रिकॉर्डिंग आई सामने : एयर ट्रेफिक कंट्रोल के साथ बातचीत की रिकॉर्डिंग से पता चलता है कि शनिवार सुबह लापता होने से ठीक पहले विमान में बिजली से जुड़ी दिक्कतें आईं और वह तूफान में फंस गया। ऐसी स्थितियों में, विमान के बिना इंस्ट्रुमेंट्स की मदद के उड़ने की संभावना थी। विमान के लापता होने से ठीक पहले एयर ट्रेफिक कंट्रोल के साथ बातचीत में, पायलट ने बिजली की समस्या बताई और इमरजेंसी घोषित की। इस बातचीत का ऑडियो एक वेबसाइट पर पोस्ट किया गया है, जिसमें एक कंट्रोलर को पायलट से यह पूछते हुए सुना जा सकता है, ‘रोजर, क्या आपने कहा कि आप डेड रेकनिंग (नेविगेशनल एड्स के बिना उड़ान) से आ रहे हैं? क्या आपने यही कहा कनाडा में रजिस्टर्ड थी एयर एम्बुलेंस ऐसी स्थिति में, पायलट को यह पता लगाने में मुश्किल हो सकती है कि विमान मुड़ रहा है, ऊपर जा रहा है या नीचे आ रहा है।यह विमान, जिसने बरमूडा के एल.एफ.वेड इंटरनेशनल एयरपोर्ट से उड़ान भरी थी, कनाडा में रजिस्टर्ड एक एयर एम्बुलेंस थी। एयरपोर्ट चलाने वाली कंपनी ‘स्काईपोर्ट’ के अनुसार, इसमें छह लोग सवार थे, चार क्रू मेंबर और दो यात्री। यह विमान रात में बरमूडा से मैसाचुसेट्स के लिए रवाना हुआ था। कनाडा के ट्रांसपोर्ट मिनिस्टर स्टीवन मैकिनॉन ने सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म ‘ट्व’ पर बताया कि विमान में सवार छह लोगों में से चार कनाडाई नागरिक थे।

पश्चिम एशिया: सऊदी अरब की सबसे बड़ी तेल कंपनी

अरामको पर हूतियों का हमला, बढ़ सकती हैं तेल की कीमतें

सना, एंजेसी। यमन की अंतरराष्ट्रीय स्तर पर मान्यता प्राप्त सरकार ने शनिवार (स्थानीय समय) को सना और सादा में हूतियों के महत्वपूर्ण ठिकानों पर हमले की पुष्टि की। यह कार्रवाई तब हुई जब हूती समूह ने सऊदी अरब की राजधानी रियाद में देश की सबसे बड़ी तेल कंपनी अरामको की सुविधाओं को निशाना बनाकर मिसाइल और ड्रोन से हमला करने का दावा किया।

बढ़ सकती तेल की कीमत : अरामको संयंत्र से उठती आग की लपटों और घने धुएं ने चिंता बढ़ा दी है। सऊदी अरब की यह बड़ी तेल कंपनी तेल सप्लाई में अहम भूमिका निभाती है। ऐसे में अगर हमले से संयंत्र को बड़ा नुकसान हुआ है, तो तेल की सप्लाई प्रभावित हो सकती है। इसका असर अंतरराष्ट्रीय बाजार पर भी पड़ सकता है और कच्चे



तेल की कीमतों में तेजी देखने को मिल सकती है। वहीं, पश्चिम एशिया में पहले से ही तनाव बना हुआ है। ऐसे में अरामको पर हुआ यह हमला ऊर्जा बाजार के लिए नई चिंता खड़ी कर सकता है।

सैन्य कार्रवाई के बाद जारी किया बयान : इन घटनाओं से जारी संघर्ष और बढ़ गया है। दोनों पक्षों ने सैन्य कार्रवाई का दावा करते हुए बयान जारी किए हैं। यमन की अंतरराष्ट्रीय स्तर पर मान्यता प्राप्त सरकार की सशस्त्र सेनाओं के मीडिया सेंटर सेजारी

लॉसएंजिल्स में यूनिवर्सिटी कैंपस के पास देर रात गोलीबारी, दो लोगों की मौत; दर्जनों लोग हिरासत में

लॉस एंजिल्स , एंजेसी। लॉस एंजिल्स में यूनिवर्सिटी कैंपस के पास एक स्ट्रिप मॉल में हुई गोलीबारी में कम से कम दो लोगों की मौत हो गई। इसके साथ ही दर्जनों अन्य लोगों को हिरासत में लिया गया। यह जानकारी लोकल मीडिया की रिपोर्ट के मुताबिक है।

यह घटना कब हुई : न्यूयॉर्क पोस्ट की शनिवार की रिपोर्ट के अनुसार, यह गोलीबारी शुक्रवार रात 11 बजे के कुछ समय बाद यूनिवर्सिटी प्लाजा में हुई, जो कैलिफोर्निया स्टेट यूनिवर्सिटी, नॉर्थ्रिज से लगभग एक ब्लॉक दूर स्थित एक लोकप्रिय शॉपिंग सेंटर है। शिन्हुआ समाचार एजेंसी ने न्यूयॉर्क पोस्ट का हवाला देते हुए बताया कि पुलिस को बड़ी संख्या में लोगों के जमा होने की सूचना मिली और मौके पर पहुंचने पर उन्हें गोली चलने की आवाज सुनाई दी। गोलीबारी के बाद, प्लाजा में एक इमारत के बाहर दर्जनों लोगों को हिरासत में लिया गया। रिपोर्ट के अनुसार, हिरासत में लिए गए कई लोग गोलीबारी के समय पास के एक लाउंज के अंदर थे।

रिपोर्ट में क्या बताया गया है : लोकल टीवी स्टेशन केटीएलएफ के अनुसार, लॉस एंजिल्स पुलिस विभाग के लेफ्टिनेंट गाइ गोलैन ने बताया कि मारे गए दोनों लोग एक पुरुष और एक महिला थे। माना जा रहा है कि दोनों की उम्र 18 से 25 साल के बीच थी। केटीएलए की

रिपोर्ट के मुताबिक, गोलैन ने कहा कि अधिकारी एक और संभावित पीड़ित की तलाश कर रहे हैं और पुलिस घटनास्थल के अंदर और आसपास के इलाके में जांच जारी रखे हुए है। इससे पहले सितंबर में, अमेरिका के मिनेसोटा राज्य के सबसे बड़े शहर मिनियापोलिस में हुई गोलीबारी में दो लोगों की मौत हो गई थी।

संदिग्ध की भी मौत हो गई थी। लोकल टेलीविजन स्टेशन केएसटीपी ने यह जानकारी दी। संदिग्ध ने आत्महत्या कर ली। वहीं, 2 सितंबर, बुधवार (स्थानीय समय) को हुई इस गोलीबारी में तीन पुलिस अधिकारियों सहित छह अन्य लोग घायल हो गए। मिनियापोलिस शहर ने एक्स पर एक पोस्ट में कहा कि स्थानीय समय के अनुसार शाम लगभग 4:36 बजे पुलिस अधिकारियों को गोलीबारी की घटना स्थल पर भेजा गया था। अधिकारी एक ऊंची अपार्टमेंट बिल्डिंग में दाखिल हुए, जहां उन्हें पीड़ित मिले और और गोतलियां चलने की आवाज सुनाई दी। अधिकारी गोली चलने की आवाज का पीछा करते हुए इमारत की ऊपरी मंजिल पर पहुंचे। उस मंजिल पर, अधिकारियों को धुंध का सामना करना पड़ा जिससे कुछ भी साफ दिखाई नहीं दे रहा था। पोस्ट में आगे बताया गया कि तीन अधिकारी घायल हो गए, जिनमें से दो को गोली लगी थी।

बांग्लादेश में दुर्गा पूजा से पहले मंदिर में

सात मूर्तियां खंडित, जांच में जुटी पुलिस



व्यवस्था भी की गई है।' रिपोर्ट में इस घटना को बांग्लादेश में हिंदू मंदिरों और अल्पसंख्यक समुदायों पर हमलों को लेकर जताई जा रही चिंताओं से जोड़ा गया है। स्थानीय मीडिया के मुताबिक, पिछले महीने फरीदपुर शहर के उत्तर कालीबाड़ी तहत इस मंदिर में करीब 85 वर्षों से दुर्गा पूजा का आयोजन किया जा रहा है। मंदिर में इस साल दुर्गा पूजा की तैयारियां चल रही हैं। मुख्य देवी दुर्गा की मूर्ति समेत सात मूर्तियां लगभग तैयार हो चुकी थीं और केवल रंगाई का काम बाकी था। जमुरकी आर्य समिति के अध्यक्ष प्रकाश बकाली ने बताया, ‘हम बुधवार रात करीब 10 बजे तक मंदिर में थे। इसके बाद घर चले गए। गुरुवार सुबह जब मंदिर लौटे तो मूर्तियां टूटी हुई मिलीं।’

उन्होंने कहा, ‘हमें नहीं पता कि यह किसने किया। हमने पुलिस में औपचारिक शिकायत दर्ज कराई है। अब हमारी मांग है कि कानून प्रवर्तन एजेंसियां जिम्मेदार लोगों का पता लगाएं और उन्हें कानून के दायरे में लाएं।’ घटना की पुष्टि करते हुए तंगेल के सहान्वक पुलिस अधीक्षक अदनान मुस्तफिज ने बताया कि कुछ मूर्तियां आंशिक रूप से क्षतिग्रस्त मिलीं हैं। उन्होंने कहा, ‘हम दौधियों की पहचान कर उन्हें कानून के दायरे में लाने के लिए जांच कर रहे हैं। जरूरी सुरक्षा

मुंबई में कांग्रेस मुख्यालय से आदिवासी छात्रों को हिरासत में लेने का आरोप, पुलिस ने किया इंकार

मुंबई (एजेंसी)। कांग्रेस ने आरोप लगाया है कि पुलिस ने मुंबई स्थित पार्टी के महाराष्ट्र मुख्यालय तिलक भवन में प्रवेश कर नासिक से पहुंचे आदिवासी छात्रों और एनएसयूआई कार्यकर्ताओं को हिरासत में लिया। पार्टी ने सभी को तत्काल रिहा करने की मांग की है। हालांकि, पुलिस ने तिलक भवन से किसी भी व्यक्ति की गिरफ्तारी से इंकार किया है। महाराष्ट्र कांग्रेस अध्यक्ष हर्षवर्धन सपकाल ने आरोप लगाया कि आदिवासी छात्र अपनी मांगों को लेकर आजाद मैदान में प्रदर्शन करने के लिए नासिक से मुंबई आए थे और रात में दादर स्थित तिलक भवन में रुक थे। उनके मुताबिक, पुलिसकर्मी देर रात पार्टी कार्यालय में पहुंचे, छात्रों को धमकाया और कुछ को हिरासत में लिया। सपकाल ने एनएसयूआई महाराष्ट्र अध्यक्ष सागर सालुंखे और युवा कांग्रेस के मुंबई प्रमुख को भी गिरफ्तार करने का दावा किया है। उन्होंने चेतावनी दी कि यदि छात्रों और एनएसयूआई पदाधिकारियों को रिहा नहीं किया गया, तब कांग्रेस नेता मुख्यमंत्री देवेंद्र फडणवीस के सरकारी आवास ‘वर्षा’ का घेराव करने वाले हैं। कांग्रेस महासचिव जयराम रमेश ने इस कार्रवाई को लेकर राज्य सरकार पर निशाना साधकर आदिवासी विरोधी बताया। दूसरी ओर, पुलिस उपयुक्त मनीष कलवानिया ने कांग्रेस के आरोपों को खारिज किया। उन्होंने कहा कि तिलक भवन से किसी को गिरफ्तार नहीं किया गया है। पुलिस के अनुसार, प्रदर्शनकारियों ने राज्यपाल के आवास लोक भवन तक मार्च निकालने का आह्वान किया था। लोक भवन जाने की कोशिश कर रहे लोगों को अलग-अलग स्थानों से हिरासत में लिया गया और उनके खिलाफ कानूनी कार्रवाई की जा रही है। कांग्रेस के अनुसार, आदिवासी छात्र छात्रवृत्ति, आश्रम स्कूलों में बुनियादी सुविधाओं और छात्रावासों समेत कई मांगों को लेकर 10 दिन से अधिक समय से आंदोलन कर रहे हैं। पार्टी का दावा है कि कुछ छात्र बसों और पैदल मुंबई पहुंचे हैं। छात्र आदिवासी विकास मंत्री और विभाग के आयुक्त के इस्तीफे की मांग भी कर रहे हैं। कांग्रेस ने कहा कि छात्रों की आवाज दबाने की कोशिश स्वीकार नहीं की जाएगी और पार्टी उनके अधिकारों के लिए उनके साथ खड़ी रहेगी।

गांधीजी पर आपत्तिजनक रील बनाना पड़ा भारी

सुरत (एजेंसी)। सुरत में 47 साल की महिला इण्लूपेंसर को महात्मा गांधी की तस्वीर वाले 500 रुपए के नोट पर आपत्तिजनक रील बनाने के आरोप में गिरफ्तार किया गया है। सुरत पुलिस की साइबर क्राइम ब्रांच ने सोमवार को यह कार्रवाई की। आरोपी की पहचान सिमरन पटेल के रूप में हुई है। उसके इंस्टाग्राम पर करीब 10 लाख फॉलोअर्स हैं। पुलिस के मुताबिक, सिमरन ने 1 अक्टूबर को इंस्टाग्राम पर यह रील अपलोड की थी। इसके बाद एक नागरिक ने पुलिस से शिकायत की। साइबर क्राइम ब्रांच की प्रेस नोट के अनुसार, सिमरन पटेल सूत्र के अडाजण इलाके की रहने वाली हैं। वह गृहिणी हैं। पुलिस ने बताया कि रील में 500 रुपए के नोट पर गांधीजी की तस्वीर को अश्लील तरीके से दिखाया गया था। इसमें आपत्तिजनक और अपमानजनक आते कहीं गई थीं। रील में यौन संकेत वाले इशारे भी किए गए थे। सिमरन ने यह वीडियो अपने इंस्टाग्राम अकाउंट पर शेयर किया था।

संत रविदास की प्रतिमा तोड़ने के आरोप में पांच आरोपी गिरफ्तार

बलिया (एजेंसी)। यूपी के बलिया जिले के सुखपुरा थाना क्षेत्र में संत रविदास की प्रतिमा तोड़े जाने के मामले में पुलिस ने सात लोगों के खिलाफ मामला दर्ज कर उनमें से पांच आरोपियों को गिरफ्तार किया है और दो की तलाश जारी है। पुलिस ने सोमवार को बताया कि सुखपुरा थाना क्षेत्र के कुम्हिया गांव में अनुसूचित बस्ती के लोगों ने संत रविदास मंदिर में प्रतिमा स्थापित की थी, जिसे शनिवार देर रात कुछ अराजक तत्वों ने क्षतिग्रस्त कर दिया। मीडिया रिपोर्ट के मुताबिक थानाध्यक्ष ने बताया कि घटना की सूचना मिलते ही पुलिस मौके पर पहुंची और क्षतिग्रस्त मरम्मत की तत्काल मरम्मत करा दी। उन्होंने बताया कि रविदास को सोहन राम की तस्वीर पर सात लोगों के खिलाफ मामला दर्ज किया था। पुलिस ने रविदास को मोहन, राकेश, उमेश, शंभू और अशोक को गिरफ्तार कर लिया है। नामजद आरोपी लालबहादुर और वकील की तलाश की जा रही है। उन्होंने बताया कि अब गांव में स्थिति शांतिपूर्ण है।

विपक्षी विधायक श्रेय न ले सकें इसलिए रोकी जा रही सहायता राशि : सीएम सरमा

गुवाहाटी (एजेंसी)। असम के सीएम हिमंत बिस्व सरमा ने कहा है कि पूर्वी जिलों में बाढ़ प्रभावित लोगों को दी जाने वाली आर्थिक मदद जारी करने में देरी की जा रही है, ताकि विपक्षी विधायक अखिल गोगोई इसका श्रेय न ले सकें। सीएम सरमा ने कहा कि करीब सात दिन पहले गोगोई ने मुआवजे के मुद्दे पर मुझसे फोन पर काफी देर तक बात की थी...मैंने उन्हें विस्तार से समझाया था। अब जब उन्हें पता है कि लोगों को पैसा मिलने लगा है, तो वह इसका श्रेय लेना चाहते हैं। हमें सहायता राशि जारी करने में देरी करनी होगी, ताकि वह इसका श्रेय न ले सकें। सरमा ने कहा कि मेरी गलती यह थी कि मैंने उन्हें मुआवजे से जुड़ी जानकारी दे दी। वह इस मुद्दे पर राजनीति कर रहे हैं और मैं भी राजनीति करूंगा।

संस्कृत के श्लोक भी समझें, कंप्यूटर कोड भी: राजनाथ सिंह

अयोध्या , एजेंसी।

रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह ने कहा कि देश को ऐसे विद्यार्थियों की जरूरत है जो संस्कृत के श्लोकों के साथ-साथ कंप्यूटर कोड को भी समझें। वे वेदों के मंत्रों की गहराई को जानें और आधुनिक विज्ञान की भाषा को भी समझने की क्षमता रखें। उन्होंने कहा कि विद्यार्थियों को न्याय और भीमांसा जैसे भारतीय ज्ञान-विषयों के साथ आधुनिक समाज की समस्याओं को समझने की योग्यता भी विकसित करनी चाहिए।

रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह ने सोमवार को अयोध्या में श्रीनारायण संस्कृत महाविद्यालय के नए भवन का उद्घाटन किया। इस दौरान उन्होंने कहा कि केंद्र सरकार ने संस्कृत के अध्ययन को आधुनिक शिक्षा से जोड़ने पर विशेष जोर दिया है। रक्षा मंत्री ने कहा कि परंपरा को संरक्षित करने का सबसे बेहतर तरीका उसे वर्तमान समय की जरूरतों से जोड़ना है। आने वाली पीढ़ी के लिए केवल अतीत को जानना पर्याप्त नहीं है, बल्कि उसे अतीत से प्रेरणा और शक्ति लेकर भविष्य का निर्माण करना होगा। उन्होंने कहा कि वेदों से



लेकर उपनिषद, दर्शन से लेकर व्याकरण, आयुर्वेद से लेकर गणित, ज्योतिष से लेकर साहित्य और न्याय से लेकर भीमांसा तक भारतीय ज्ञान-परंपरा का बड़ा हिस्सा संस्कृत के माध्यम से पीढ़ी-दर-पीढ़ी आगे बढ़ा है। इस परंपरा ने दुनिया की बौद्धिक विरासत को भी समृद्ध किया है। रक्षा मंत्री सिंह ने कहा कि भारतीय सभ्यता की बड़ी विशेषता यह रही है

कि यहां ज्ञान को सिर्फ किताबों तक सीमित नहीं रखा गया। ज्ञान को परंपरा बनाया गया और उस परंपरा को संस्कार का रूप दिया गया। इसके बाद शिक्षा के माध्यम से संस्कारों को समाज के व्यवहार में उतारा गया। उन्होंने कहा कि आज पूरी दुनिया भारत की संस्कृति के पुनरुत्थान को देख रही है और अयोध्या एक बार फिर अपने प्राचीन गौरव को प्राप्त

कर रही है। इस गौरव में संत परंपरा का योगदान बेहद महत्वपूर्ण रहा है। उन्होंने कहा कि संस्कृत को केवल एक भाषा के तौर पर नहीं देखा जाना चाहिए। संस्कृत में भारत की ज्ञान-परंपरा का विशाल भंडार मौजूद है। उन्होंने भारतीय संस्कृति में संतों के योगदान को भी रेखांकित किया। उन्होंने कहा कि भारत की स्मृतियों को एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी तक पहुंचाने में संतों की महत्वपूर्ण भूमिका रही है। संतों ने लोगों को अपनी संतानों की तरह प्रेम, ज्ञान और शांति का पाठ पढ़ाया। उन्होंने कहा कि देश के संतों ने जेल की यातनाएं सहें और अपने प्राणों तक की आहुति दी। आज जब रामलला भव्य मंदिर में विराजमान हैं, तब उन संतों को भी याद किया जाना चाहिए, जिनके त्याग और बलिदान से यह संभव हुआ। उन्होंने कहा कि अयोध्या की पुण्यभूमि पर वर्षों का संघर्ष आज भव्य रूप में सामने है और भगवान रामलला अपने घर में विराजमान हो चुके हैं। उन्होंने कहा कि अयोध्या की संत परंपरा 500 से अधिक वर्षों से श्रीराम जन्मभूमि से जुड़े विभिन्न आंदोलनों की सहयोगी रही है।

बंगाल में यूसीसी लागू करने के शुभेंदु अधिकारी के वादे से विहिप हुई खुश

नई दिल्ली (एजेंसी)। विध्व हिंदू परिषद (विहिप) ने पश्चिम बंगाल में समान नागरिक संहिता (यूसीसी) लागू करने के बंगाल के मुख्यमंत्री शुभेंदु अधिकारी के वादे का स्वागत किया है। विहिप ने कहा कि समान नागरिक संहिता लागू होने से राज्य में सभी नागरिकों की सुरक्षा और अधिकारों को मजबूत करने में मदद मिलेगी। विहिप के राष्ट्रीय प्रवक्ता विनोद बंसल ने पोस्ट के जरिए सीएम अधिकारी की घोषणा की खूब सराहना की। उन्होंने कहा कि पश्चिम बंगाल, उत्तराखंड और गुजरात के बाद यूसीसी लागू करने की योजना घोषित करने वाला देश का तीसरा राज्य होगा। विहिप के राष्ट्रीय प्रवक्ता बंसल ने कहा कि विहिप सीएम सुवेंदु अधिकारी की अहम घोषणा का स्वागत करती है और महत्वपूर्ण कदम मानती है। उन्होंने सीएम अधिकारी की ओर से छह महीने के भीतर ‘लव जिहाद’ और ‘लैंड जिहाद’ के खिलाफ कानून बनाने की प्रतिबद्धता का पूर्ण स्वागत किया। बंसल के मुताबिक, इसतरह के कानून नागरिकों और राज्य की सुरक्षा सुनिश्चित करने में मदद करने वाले हैं। उन्होंने दावा किया कि ‘लैंड जिहाद’ के खिलाफ प्रस्तावित कानून के जरिए सुवेंदु सरकार कथित अवैध कब्जे से सरकारी और निजी भूमि को मुक्त कराने की दिशा में कदम उठा सकती है। सीएम शुभेंदु अधिकारी ने कोलकाता में विहिप के पूर्व अध्यक्ष अशोक सिंघल की जन्म शताब्दी के मौके पर आयोजित कार्यक्रम को संबोधित करते हुए ये घोषणाएं की थीं।

एसआईआर विवाद-सुप्रीम कोर्ट संविधान और लोकतंत्र को बचाएं: चिदंबरम

-पूर्व जजों की टिप्पणियों का हवाला देकर चुनाव आयोग के कामकाज पर उठाए सवाल

नई दिल्ली, एजेंसी।

कांग्रेस नेता और राज्यसभा सांसद पी चिदंबरम ने सोमवार को एसआईआर और वोट के अधिकार को लेकर जारी विवाद के बीच सुप्रीम कोर्ट से संविधान और लोकतंत्र की रक्षा के लिए हस्तक्षेप की उम्मीद जताई है। उन्होंने सुप्रीम कोर्ट के पूर्व जज जस्टिस रोहिंटन एफ नरिमन और मौजूदा जज जस्टिस उज्जल भूषण की हालिया टिप्पणियों का हवाला देते हुए चुनाव आयोग के कामकाज पर उठ रहे सवालों का जिक्र किया। चिदंबरम ने एसएस पर लिखा कि लोगों को राजकोट में जस्टिस नरिमन और हैदराबाद में जस्टिस भूषण की टिप्पणियां पढ़नी चाहिए। चिदंबरम ने उम्मीद जताई कि सुप्रीम कोर्ट इस मौके पर आगे आएगा और संविधान व लोकतंत्र को बचाएगा। साथ ही उन्होंने अपने राजनीतिक विरोधियों पर तंज कसते हुए ‘भक्तों’ से चुप रहने की अपील की। चिदंबरम की यह टिप्पणी ऐसे समय आई है जब सुप्रीम कोर्ट में मुख्य चुनाव आयुक्त ज्ञानेश कुमार के कामकाज को चुनौती देने वाली याचिकाओं पर सुनवाई होनी है। एसआईआर को लेकर भी राजनीतिक दलों और चुनाव आयोग



के बीच लगातार विवाद चल रहा है। 4 अक्टूबर को जस्टिस उज्जल भूषण ने चुनावी अधिकार से जुड़े एक कार्यक्रम में कहा था कि अगर किसी प्रक्रिया के कारण लाखों नागरिक अपने मताधिकार से वंचित होते हैं और उन्हें वोट देने के अधिकार के बिना ‘दूसरे दर्जे का नागरिक’ बना दिया जाता है, तो ऐसी प्रक्रिया मूल रूप से मनमानी है। उन्होंने कहा था कि इस स्थिति को किसी भी तरह के ‘व्हाटअबाउटरी’ से सही नहीं उठराया जा सकता। उनके मुताबिक ऐसा कदम संविधान के मूल केंद्र पर चोट है। मीडिया रिपोर्ट के मुताबिक पूर्व सुप्रीम कोर्ट जज जस्टिस रोहिंटन एफ नरिमन ने भी एसआईआर के दौरान मतदाताओं के नाम हटाए जाने को लेकर चिंता जताई। पश्चिम बंगाल की मतदाता सूची से करीब 90 लाख नाम हटाए जाने का जिक्र करते हुए उन्होंने कहा कि वोट देने का अधिकार लोकतंत्र के केंद्र में है। जस्टिस नरिमन ने चुनाव आयोग की कार्यप्रणाली पर भी सवाल उठाए।

युवाओं से वोटिंग अधिकार छीनने में मिलीभगत: सौरभ दास

सुप्रीम कोर्ट पर सीजेपी के गंभीर आरोप

नई दिल्ली, एजेंसी।

काँकरोच जनता पार्टी (सीजेपी) ने सुप्रीम कोर्ट पर बेहद गंभीर सवाल उठाए हैं। पार्टी के पदाधिकारी सौरभ दास ने एक बयान जारी कर शीर्ष न्यायालय पर युवाओं के वोटिंग अधिकार को छीनने में मिलीभगत का आरोप लगाया है। उन्होंने इस दौरान दो जजों, मुख्य न्यायाधीश सूर्यकांत और जस्टिस जॉयमाला बागची, का नाम लेते हुए कहा कि बंगाल और बिहार में एसआईआर प्रक्रिया को बिना किसी बाधा के चलने देने वाले ये जज अब शांत रहे। दास ने कहा कि भले ही वे अब कुछ करना चाहें, तो कर सकते हैं, लेकिन किसी को इससे फर्क नहीं पड़ता, क्योंकि सुप्रीम कोर्ट जेन जी के वोट देने के

अधिकार और राज्य के चुनाव छीनने की इस मिलीभगत में शामिल था। सौरभ दास ने अपने बयान में न्यायपालिका की विश्वसनीयता पर भी सवाल उठाए। उन्होंने लिखा कि इसे सुनिश्चित करते हुए समय रहते जरूरी याचिकाएं नहीं सुनी गईं, जिनमें महाराष्ट्र सरकार का गिरना, पार्टियों का टूटना और दिल्ली में संवैधानिक संकट जैसे मामले शामिल हैं। दास ने आरोप लगाया कि इन सभी मामलों में भाजपा की मर्जी चली, जो हमारी न्यायपालिका पर एक बड़ा धब्बा है। उन्होंने कहा कि ऐसे में अब सुप्रीम कोर्ट की बेंच जो चाहे करे, लेकिन लोगों की नजरों में उसकी विश्वसनीयता नहीं रहेगी। विश्वसनीयता किस बात की होगी, यह भारत के लोग

और युवा तय करेंगे, कोर्ट कल या कभी भी जो चाहे तो करे। बता दें कि पटना के रहने वाले राकेश कुमार सिंह ने इस मामले में एक जनहित याचिका दाखिल की है। इस याचिका के जरिए सुप्रीम कोर्ट से यह तय करने का अनुरोध किया गया है कि क्या मुख्य चुनाव आयुक्त कुमार अकेले उन शक्तियों का इस्तेमाल कर रहे हैं, जो कानूनी तौर पर पूरे निर्वाचन आयोग की है। याचिका में यह भी मांग की गई है कि अगर ऐसा है तो उन कार्यों को अनधिकृत घोषित किया जाए और उपयुक्त कानूनी कार्रवाई की जाए। याचिका में निर्देश देने की मांग की गई है कि प्रतिवादी संख्या 3 (सीईसी) इस याचिका की लंबित अंतिम सुनवाई तक मुख्य निर्वाचन आयुक्त के तौर पर



काम न करें। साथ ही यह भी निर्देश दिया जाए कि इस दौरान आयोग का कामकाज प्रतिवादी संख्या 4 (सुखबीर सिंह संघू) और 5 (विवेक जोशी) की सर्वसम्मति से चलाया जाए और परिणामस्वरूप रिक्त होने वाले पद पर कोई भी नियुक्ति एक ऐसी समिति की सिफारिश पर की जाए, जिसमें माननीय प्रधान न्यायाधीश भी शामिल हों।

नीतीश कुमार पहुंचे ललन सिंह के घर, अनंत सिंह-नीरज कुमार विवाद का निकल सकता है हल?

पटना (एजेंसी)। पटना स्नातक निर्वाचन क्षेत्र के चुनाव को लेकर जेडीयू विधायक अनंत सिंह और पार्टी के उम्मीदवार नीरज कुमार के बीच चल रहे विवाद के बीच पूर्व सीएम नीतीश कुमार के केंद्रीय मंत्री ललन सिंह से मिलने उनके आवास पहुंचे। दोनों नेताओं के बीच हुई इस मुलाकात को अनंत सिंह और नीरज कुमार के बीच चल रहे विवाद के लिहाज से अहम माना जा रहा है। जानकारी के मुताबिक ललन सिंह दिल्ली रवाना होने से पहले उनका जवाब आ सकता है। माना जा रहा है कि ललन सिंह के बयान के बाद अनंत सिंह और नीरज कुमार के विवाद पर तस्वीर साफ होने की उम्मीद है। माना जा रहा है कि ललन सिंह का बयान इस पूरे विवाद की दिशा तय कर सकता है।

बता दें इससे पहले जेडीयू के राष्ट्रीय कार्यकारी अध्यक्ष संजय झा ने इसे ललन सिंह के जस्टिस नरिमन ने चुनाव आयोग की कार्यप्रणाली पर भी सवाल उठाए।



पहल करने की बात कही थी। वहीं ललन सिंह ने इस पर अब तक एक तरह से चुप्पी साध रखी थी, लेकिन इशारों में यह भी बता दिया था कि वे नीरज

कुमार और अनंत सिंह की अदवत के पचड़े से दूर रहना चाहते हैं। अब जब नीतीश कुमार खुद उनके आवास पहुंचे और निशांत कुमार ने खुलकर

नीरज कुमार के समर्थन में मोर्चा संभाल लिया है, तो माना जा रहा है कि ललन सिंह की चुप्पी टूटेगी और पार्टी इस विवाद पर अपना स्टैंड क्लियर करेगी।

रिपोर्ट के मुताबिक ललन सिंह ने अब तक इस विवाद पर खुलकर कोई हस्तक्षेप नहीं किया है। वहीं सोमवार को जेडीयू के चारों उम्मीदवारों का नामांकन से पहले नीतीश-ललन की यह मुलाकात बेहद अहम मानी जा रही है। अब नीतीश कुमार का उनके आवास पहुंचना इस पूरे घटनाक्रम में नया मोड़ माना जा रहा है। बता दें अनंत सिंह लगातार नीरज कुमार के खिलाफ खुलकर मोर्चा खोले हुए हैं, जबकि नीरज कुमार पटना स्नातक निर्वाचन क्षेत्र से जेडीयू के उम्मीदवार हैं। एक ही पार्टी के विधायक और उम्मीदवार के बीच इस तरह का विवाद पार्टी नेतृत्व के लिए भी असहज स्थिति पैदा कर रहा है।

ममता बनर्जी की 2021 चोट की मेडिकल रिपोर्ट कथित तौर पर लीक, अस्पताल को कानूनी नोटिस

कोलकाता , एजेंसी।

पश्चिम बंगाल की पूर्व मुख्यमंत्री ममता बनर्जी की 2021 में नंदीग्राम चुनाव प्रचार के दौरान लगी पैर की चोट से जुड़े मेडिकल रिकॉर्ड कथित तौर पर सार्वजनिक होने के बाद राजनीतिक विवाद तेज हुआ है। ममता बनर्जी के वकील ने उनके इलाज से जुड़े गोपनीय दस्तावेजों के कथित अनधिकृत खुलासे को लेकर एसएसकेएम अस्पताल प्रबंधन और राज्य स्वास्थ्य विभाग के कई अधिकारियों को कानूनी नोटिस भेजा है। नोटिस में आरोप लगा है कि ममता के इलाज और स्वास्थ्य से जुड़ी संवेदनशील जानकारी तथा मेडिकल रिपोर्ट बिना अनुमति सार्वजनिक की गई। उनके वकील ने मरीज की मेडिकल गोपनीयता और चिकित्सकों के पेशेवर आचार नियमों का



उल्लंघन बताया है। यह कार्रवाई मुख्यमंत्री सुवेंदु अधिकारी के उन हालिया वादों के बाद हुई है, जिसमें उन्होंने 2021 के विधानसभा चुनाव के दौरान नंदीग्राम में ममता के पैर में लगी चोट को लेकर सवाल उठाए थे। सीएम अधिकारी ने मरीज की मेडिकल दस्तावेजों का हवाला देकर दावा किया कि अस्पताल के

रिकॉर्ड में पैर में फ्रैक्चर या डिसलोकेशन का कोई प्रमाण नहीं था। उन्होंने इस मामले की जांच की बात भी कही थी। तृणमूल कांग्रेस ने अधिकारियों के आरोपों को खारिज करते हुए उन्हें बेबुनियाद और दुर्भाग्यपूर्ण बताया। पार्टी का आरोप है कि इसतरह के दावे राजनीतिक लाभ लेने और चुनावी माहौल को प्रभावित करने के उद्देश्य से किए जा रहे हैं। मामला 10 मार्च 2021 का है, जब नंदीग्राम के बिरलिया स्थित रेयापाड़ा इलाके में चुनाव प्रचार के दौरान ममता बनर्जी के बाएं पैर में चोट लगी थी। उन्होंने शुरुआत में आरोप लगाया था कि कुछ लोगों ने उन्हें धक्का दिया, जिससे वह कार के खुले दरवाजे से टकरा गई। बाद में उन्होंने पीड़ित के दबाव में चोट लगने की बात भी कही थी।

कांग्रेस की तीन मांगों में से कोई भी मांग नामंजूर करने का विकल्प नहीं -खड़गे बोले- तानाशाह घबरायें है, ध्यान भटकाने के एक और अध्याय के लिए तैयार रहें

नई दिल्ली, एजेंसी।

मुख्य चुनाव आयुक्त ज्ञानेश कुमार और एसआईआर को लेकर विपक्ष आक्रामक है। सोमवार को कांग्रेस अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खड़गे ने कहा कि कांग्रेस पार्टी की 3 मांगों से समझौता नहीं करेगी। पहली ज्ञानेश कुमार का इस्तीफा, दूसरी एसआईआर को रद्द करना और तीसरी- बैलेट पेपर पर चुनाव कराना। खड़गे ने एक्स पर पोस्ट में कहा कि देशभर में कांग्रेस कार्यकर्ता और इंडिया गठबंधन के साथी इन तीन मुद्दों को लेकर सड़कों पर हैं, जो भी सीविल सोसाइटी मेंबर्स और यूथ ऑर्गेनाइजेशन इन मुद्दों पर देश

में जगह-जगह संघर्ष कर रहे हैं, हम उनके साथ हैं। खड़गे ने कहा कि दूसरी और भाजपा ने दिल्ली में महिला पत्रकारों का उन्नीड़न किया, वो बेहद निंदनीय है। तानाशाह बहुत घबरायें हुआ है, ध्यान भटकाने के एक और अध्याय के लिए तैयार रहिए। मुख्य चुनाव आयुक्त और 2 चुनाव आयुक्तों में 10 महीनों के अंदर 14 बार मतभेद हुए। चुनाव आयुक्तों ने इतनी ही बार लिखित आपत्ति दर्ज कराई। विपक्ष का दावा है कि एसआईआर को लेकर चलाई जा रही प्रक्रिया में बड़ी खामी है। गलत तरीके से लोगों का नाम काटा जा रहा है। कई मौकों पर विपक्ष ईवीएम

की विश्वसनीयता पर सवाल खड़े कर चुका है। इसलिए बैलेट पेपर से चुनाव करने की मांग रखी है। वहीं डीएमके के प्रवक्ता टीकेएस एल्लगोवन ने सोमवार को कहा, ज्ञानेश कुमार बीजेपी के गुलाम हैं, न्यूट्रल आदमी नहीं हैं। विवाद के बीच बीजेपी का कहना है कि जब भी विपक्ष चुनाव हारता है, तो वह ईवीएम या इलेक्शन कमीशन को दोष देता है। तेलंगाना के बीजेपी अध्यक्ष रामचंद्र राव ने कहा कि जब वो यहां जीतते हैं तो चुनाव ठीक होता है, हारते हैं तो चुनाव आयोग पर सवाल उठाते हैं।

महाराष्ट्र में दर्ज की जाती हैं सबसे अधिक आत्महत्याएं: डब्ल्यूएचओ

नई दिल्ली, एजेंसी।

किसी देश में आत्महत्या से होने वाली कुल मौतों की संख्या अधिक हो सकती है, लेकिन आबादी के अनुपात में उसकी दर कम हो सकती है। इसलिए के साथ प्रति एक लाख आबादी पर आत्महत्या की दर को देखना जरूरी होता है।

आत्महत्या दुनिया भर में सार्वजनिक स्वास्थ्य की गंभीर चिंता है। हालांकि अलग-अलग देशों में इसकी स्थिति एक जैसी नहीं है। विश्व स्वास्थ्य संगठन के आंकड़ों के अनुसार, आबादी के अनुपात में आत्महत्या की सबसे अधिक दर लेसोथो में दर्ज की गई है।

यहां प्रति एक लाख लोगों पर करीब 87.5 मौतें बताई गई हैं। यह दर वैश्विक औसत से काफी अधिक है। आंकड़े यह भी बताते हैं कि कम आबादी वाले किसी देश में कुल मौतों की संख्या कम होने के बावजूद प्रति व्यक्ति दर काफी ज्यादा हो सकती है। प्रति एक लाख आबादी पर आत्महत्या की ऊंची दर वाले देशों में दक्षिण कोरिया भी शामिल है। यहां यह दर करीब 27.5 से 29.1 मौतों के बीच बताई गई है। इसके बाद एस्वातिनी में करीब 27.2, गुयाना में लगभग 24.8 से 26.4 और उरुग्वे में करीब 24.8 मौतें प्रति एक लाख आबादी पर बताई गई हैं। अलग-अलग स्रोतों और वर्षों में

आंकड़ों में कुछ अंतर हो सकता है। भारत की स्थिति को समझने के लिए कुल संख्या और आबादी के अनुपात को अलग-अलग देखना जरूरी है। बड़ी आबादी के कारण भारत में आत्महत्या से होने वाली कुल मौतों की संख्या काफी अधिक है। वहीं प्रति एक लाख आबादी पर दर करीब 12 से 12.5 बताई गई है, जिसके आधार पर भारत की वैश्विक स्थिति करीब 43वें स्थान के आसपास बताई जाती है। उपलब्ध आंकड़ों में वैश्विक औसत करीब 9.2 मौतें प्रति एक लाख आबादी है। भारत में राज्यों के बीच भी तस्वीर अलग-अलग दिखाई देती है। राष्ट्रीय अपराध रिकॉर्ड ब्यूरो के आंकड़ों के मुताबिक

कुल मामलों की संख्या के आधार पर महाराष्ट्र में सबसे अधिक आत्महत्याएं दर्ज की जाती हैं। इसके बाद तमिलनाडु, मध्य प्रदेश और पश्चिम बंगाल का स्थान बताया गया है।

हालांकि जब आबादी के अनुपात में दर की बात आती है तो राज्यों की स्थिति बदल जाती है और पश्चिम में दर सबसे अधिक बताई गई है। भारत में कुछ सामाजिक समूह भी विशेष चिंता के दायरे में हैं। उपलब्ध आंकड़ों के अनुसार आत्महत्या करने वालों में दिहाड़ी मजदूरों की हिस्सेदारी 26.4 प्रतिशत बताई गई है। छात्रों और घर संभालने वालों में भी मामलों को लेकर चिंता जताई गई है। 15 से 29 वर्ष की



उम्र के युवाओं को विशेष रूप से संवेदनशील समूह माना गया है। इन आंकड़ों को समझते समय यह ध्यान रखना जरूरी है कि अलग-अलग देशों

में रिपोर्टिंग व्यवस्था, जनसंख्या संरचना और आंकड़ों की गुणवत्ता अलग हो सकती है।